INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान महिला ASI 2023

(सहायक उपनिरीक्षक)

HANDWRITTEN NOTES

PART-4

भारत इतिहास + भूगोल + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान महिला ASI

(सहायक उपनिरीक्षक)

भाग – 4

भारत का इतिहास + भूगोल + राजव्यवस्था + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान महिला ASI (सहायक उपनिरीक्षक)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान महिला ASI (सहायक उपनिरीक्षक)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/2iclos

Online order करें - https://bit.ly/asi-woman

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

भारत का इतिहास

1. प्रागैतिहासिक काल (प्राचीन काल)	1
2. वैदिक संस्कृति	4
3. बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं शैव धर्म	9
4. महाजनपद काल	13
5. मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल	15
6. गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल	19
7. प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु	21

मध्यकालीन भारत

1. अरबों का सिन्ध पर आक्रमण	37
2. दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश	39
3. विजयनगर साम्राज्य	51
4. मुगल साम्राज्य (1526 – 1707 ई.)	53
5. भक्ति एवं सूफी आंदोलन	63

आधुनिक भारत का इतिहास

1. 18 वीं शताब्दी के आसपास अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ	66
2. 1857 ई. का विद्रोह (1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन)	73
3. सामाजिक – धार्मिक सुधार आंदोलन (19 वीं सदी)	78
4. राष्ट्रीय आंदोलन	82
5. गाँधी युग	89
6. क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक	96
7. स्वतंत्रता के आस-पास का भारत	99

भारत का भूगोल

1. सामान्य परिचय	103
2. भौतिक विभाजन	105
3. नदियाँ एवं झीलें	111
4. प्राकृतिक वनस्पति	118
5. भारत में मृदा	121
6. कृषि एवं फसलें	123

7. खनिज एवं ऊर्जा संसाधन	131
8. प्रमुख उद्योग और औद्योगिक विकास	144
9. परिवहन एवं प्रमुख परिवहन गलियारे	152
भारत का संविधान	
1. संवैधानिक विकास	162
2. संविधान सभा	165
3. संविधान की प्रमुख विशेषताएं	167
4. संविधान की प्रस्तावना	170
5. मौलिक अधिकार	174
6. राज्य के नीति निदेशक तत्व	177
7. मौलिक कर्तव्य / मूल कर्तव्य	179
8. संविधान संशोधन	181
9. आपातकालीन उपबंध	187
10. केन्द्र- राज्य सम्बन्ध	194
11. राष्ट्रपति	198
12. उपराष्ट्रपति	218

13. भारतीय संसद	219
14. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	225
15. सर्वोच्च न्यायालय	226
16. राज्य विधान मंडल	228
17. निर्वाचन आयोग	234
18. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	237
19. राष्ट्रीय विकास परिषद्	239
20. केंद्रीय सतर्कता आयोग (CVC)	240
21. लोकपाल	245
22. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC)	247
23. स्थानीय स्वशासन और पंचायती राज	248
अर्थशास्त्र	
1. अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणायें	254
2. बजट एवं बजट निर्माण	257
3. बैंकिंग	267
4. सार्वजनिक वित्त (लोक वित्त)	286

5. राष्ट्रीय आय	292
6. संवृद्धि एवं विकास का आधारभूत ज्ञान	300
7. स्टॉक एक्सचेंज एवं शेयर बाजार	302
8. राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ	309
9. ई–कॉमर्स	311
10. मुद्रास्फीति – अवधारणा, प्रभाव एवं नियंत्रण तंत्र	317
11. भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र	323
12. आर्थिक समस्याएं एवं सरकार की पहलें	329
13. मानव संसाधन एवं आर्थिक विकास	337
14. गरीबी एवं बेरोजगारी	341

भारत का इतिहास

अध्याय – I

प्रागैतिहासिक काल (प्राचीन काल)

❖ सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया।
- सबसे पहले 1921 में हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी द्वारा की गई थी।
- सिन्धु घाटी सभ्यता को अन्य नामों से भी जानतें हैं।
- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया।
- वृहत्तर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा।
- सरस्वती सभ्यता भी कहा गया।
- मेलूहा सभ्यता भी कहा गया।
- कांस्यकालीन सभ्यता भी कहा गया।
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे हैं। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों की खोज की।
- हड़प्पा नामक पुरास्थल सिन्धु घाटी सभ्यता से सम्बद्ध है।
- 20 सितम्बर 1924 को जॉन मार्शल ने द इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज' के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की घोषणा की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ –

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक
- मंगोलियन – मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है।
- अल्पाइन प्रजाति।

सिन्धु सभ्यता की तिथि

- कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
- ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
- मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार पाकिस्तान और भारत में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

सुत्कांगेडोर- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है। इसकी खोज ऑरेल स्टाइन ने की थी।

- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं।

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा**- राखीगढ़ी, सिसवल कुणाल, बनावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा
  रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान** - कालीबंगा, बालाथल
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - सनौली

- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, लोथल, रोजदिख्वी, तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार

- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलों मीटर

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- **हड़प्पा**
  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज दयाराम साहनी ने की थी। खोज - वर्ष 1921 में उत्खनन-
- 1921-24 व 1924-25 में दयाराम साहनी द्वारा।
- 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
- 1946 में मार्टीयर ह्वीलर द्वारा
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- पिगट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की जुड़वा राजधानी कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम ह्वीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।
- हड़प्पा से प्राप्त कब्रिस्तान को R-37 नाम दिया।
- भारत में चाँदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता से मिलते हैं।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया
- हड़प्पा के अवशेषों में दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवास गृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति महत्त्वपूर्ण हैं।

मोहनजोदड़ो

- सिन्धु नदी के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में राखलदास बनर्जी ने की थी। उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डेल्स
- मोहनजोदड़ों का नगर कच्ची ईटों के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला मोहनजोदड़ों को स्तूपों का शहर भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले चाँदी के दो सिक्के मिले हैं
- वस्त्र निर्माण का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक 20 खम्भों वाला सभा भवन मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं।
- मोहनजोदड़ों का शाब्दिक अर्थ मृतकों का टीला है।
- मूर्ति पूजा का आरम्भ पूर्व आर्य काल से माना जाता है।
- बड़ी संख्या में कुओं की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला विशाल स्नानागार भी यहीं से प्राप्त हुआ है।

कालीबंगा-

- कालीबंगा की खोज अमलानन्द घोष द्वारा गंगानगर में की गयी थी।
- सरस्वती नदी (वर्तमान घग्घर के तट पर)
- कालीबंगा वर्तमान में हनुमानगढ़ में है।
- उत्खनन - बी.बी लाल, बी. के. थापड़ 1953 में
  कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी
- कालीबंगा से एक साथ दो फसलों की बुवाई तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है।

अध्याय – 3

बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं शैव धर्म

- **बौद्ध धर्म**

उदय के कारण

- छठी शताब्दी ई.पू. में वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डों व आडम्बरों से ग्रसित हो गई।
- मध्य गंगा घाटी में इसी समय 62 सम्प्रदायों का उदय हुआ । उनमें जैन और बौद्ध सम्प्रदाय प्रमुख थे।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे ।

सिद्धार्थ – बुद्ध का बचपन का नाम
सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्म लेने वाला ।

- जन्म 563 ई.पू. – कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था । (नेपाल)
- कुल - शाक्य (क्षत्रिय कुल)
- बुद्ध की माता – महामाया थी । उनकी माँ की मृत्यु के

बाद पालन पोषण महाप्रजापति गौतमी ने किया था ।

- पिता – शुद्धोधन शाक्य गण के मुखिया थे।
- बौद्धों की रामायण के नाम से प्रसिद्ध बुद्धचरित के रचनाकार अश्वघोष हैं ।
- 16 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध का विवाह- यशोधरा से हुआ इनके पुत्र का नाम राहुल था।

महाभिनिष्क्रमण

- 29 वर्ष की आयु में सांसारिक समस्याओं से व्यथित होकर गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था ।
- अनोमा नदी के तट पर सिर मुण्डन
- काषाय वस्त्र धारण किये ।
- प्रथम गुरु आलार कलाम थे ।
- सांख्य दर्शन के आचार्य
- बाद में उरुवेला (बोधगया) प्रस्थान
- यहाँ पांच साधक मिले । इनमें कौण्डिय प्रमुख थे ।

ज्ञान प्राप्ति –

- 35 वर्ष की आयु में – बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई । वैशाख पूर्णिमा को पीपल के वृक्ष के नीचे निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- इसी दिन से गौतम बुद्ध तथागत कहलाये तथा गौतम बुद्ध नाम भी यहीं से हुआ। वह स्थान बोधगया कहलाया । जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया।

धर्मचक्र प्रवर्तन-

- बुद्ध ने प्रथम उपदेश सारनाथ (ऋषिपतनम) में दिया जिसे बौद्ध ग्रन्थों में धर्मचक्रप्रवर्तन कहलाया।
- बोधगया से सारनाथ आये
- प्रथम उपदेश दिया-5 ब्राह्मण सन्यासियों को मागधी भाषा में ।
- गौतम बुद्ध का बौद्ध संघ में प्रवेश हुआ ।
- सर्वप्रथम अनुयायी – तपस्स जाट शुद्र कालिक
- प्रिय शिष्य - आनन्द

बौद्ध धर्म की प्रथम महिला भिक्षुणी - गौतमी (बुद्ध की मौसी)

अन्तिम उपदेश

- कुशीनारा में सुभच्छ को दिया
- हिरण्यवती नदी तट पर

महापरिनिर्वाण (मृत्यु)

- कुशीनारा में 483 ई.पू.
- 80 वर्ष की आयु में
- बुद्ध के अवशेष 8 भागों में डाले गये जहाँ स्तूप बनाये गये।

वैशाख पूर्णिमा का महत्व

- वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा भी कहते हैं ।
- गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति
- महापरिनिर्वाण - वैशाख पूर्णिमा को
  अपवाद - महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध में 32 महापुरुषों के लक्षण बताये गये हैं।

बुद्ध के प्रमुख वचन

- जीवन कष्टों से भरा है।
- लिप्सा तृष्णा का ही दूसरा रूप है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- बुद्ध , धम्म , संघ

बुद्ध के चार आर्य सत्य

1. दुःख
2. दुःख समुदाय

3. दुःख निरोध (निवारण)
4. प्रतिपदा

- इन्ही का कालान्तर में विस्तार होकर ये अष्टांगिक मार्ग कहलाये।

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक आजीव
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

- समाधि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति ।
- जीवन-मरण चक्र से मुक्ति

बुद्ध धर्म

- अनीश्वरवादी
- पुनर्जन्म में विश्वास
- अनात्मवादी धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक

जन्म - कमल व साण्ड
गृहत्याग - घोड़ा
ज्ञान - पीपल (बोधि वृक्ष)
निर्वाण - पद-चिह्न
मृत्यु - स्तूप

- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विस्तार कोशल राज्य में हुआ था ।
- बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।
- बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र – मगध

बौद्ध संगीतियां

1. 483 ई.पू.

संरक्षक शासनकाल में अजातशत्रु के
राजगृह में रचना रची गयी ।
सुत्तपिटक (बुद्ध के उपदेश) विनयपिटक (संघ के नियम)
अध्यक्ष – महाकस्सप

2. 383 ई.पू.

संरक्षक - कालाशोक
वैशाली में - भिक्षुओं में मतभेद
अध्यक्ष – सर्वकामिनी

3. 250 / 251 ई.पू.

संरक्षक शासनकाल में - अशोक
पाटलिपुत्र में रचना रची गयी
अभिधम्मपिटक
(बुद्ध के दार्शनिक विचार)
अध्यक्ष – मोग्गलिपुत्त तिस्स

4. प्रथम शताब्दी संरक्षक - कनिष्क

कुण्डलवन में (कश्मीर) हीनयान व महायान (सम्प्रदाय में बंटा)

अध्यक्ष वसुमित्र /अश्वघोष था । चतुर्थ बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म दो भागों में बंट गया था हीनयान व महायान ।
(कश्मीर) (सम्प्रदाय में बंटा)

- विहार - बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान
- चैत्य - पूजास्थल

बौद्ध धर्म को अपनाने वाले प्रमुख शासक

- बिम्बिसार - बुद्ध का मित्र
- प्रसेनजीत
- उदायिन
- अशोक – महेन्द्र (पुत्र), संघमित्रा (पुत्री)
- बौद्ध धर्म का प्रचार करने श्रीलंका गये।

नालन्दा विश्वविद्यालय

- गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।
- बौद्ध धर्म का अध्ययन करने हेतु आये ।
- फाह्यान, ह्वेनसांग (चीनी यात्री) ।
- अजातशत्रु प्रारम्भ में जैनधर्म का अनुयायी था बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी बना ।

बौद्ध धर्म की प्रमुख महिला अनुयायी

- गौतमी
- नंदा

- मल्लिका
- खेमा
- विशाखा
- यशोधरा
- आम्रपाली
- सुप्रवासा

बौद्ध धर्म के प्रतीक महात्मा बुद्ध के प्रमुख आठ स्थान

- लुम्बिनी
- बोधगया
- सारनाथ
- कुशीनगर
- वैशाली
- राजगृह
- श्रावस्ती
- संकाश्य
- बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का आदर्श बोधिसत्व है। बोधिसत्व दूसरे के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए अपने निर्वाण में विलंभ करते है।
- हीनयान का आदर्श अर्हत पद को प्राप्त करना है। जो व्यक्ति अपनी साधना से निर्वाण की प्राप्ति करतें है उन्हें ही अर्हत कहा जाता है।
- बौद्ध धर्म के बारे में हमें विशद ज्ञान त्रिपिटक (विनयपिटक, सुत्रपिटक, अभिधम्भपिटक से प्राप्त होता है। इन तीनों पिटकों की भाषा पाली है।
- पालि पिटक सबसे पुराना है।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि को चीनी परम्परा के कैंटोन अभिलेख के आधार पर निश्चित किया गया है।
- पालि त्रिपिटकों को पहली शताब्दी ईसा पूर्व में श्रीलंका के शासक वत्तगामिनी की देख-रेख में पहलीबार लिपिबद्ध किया गया।
- सूत्रपिटक के पांच निकाय हैं -दीर्घ, मज्झिम, संयुक्त, अगुंत्तर, खुद्दक,।
- बुद्ध के पूर्व जन्मों से जुड़ी जातक कथाएँ खुद्दक निकाय की 15 पुस्तकों में से एक है। खुद्दक निकाय में धम्मपद (नैतिक उपदेशों का पधात्मक संकलन) थेरगाथा (बौद्ध भिक्षुओं का गीत) और थेरीगाथा (बौद्ध भिक्षुणियो की गीत)है।
- बौद्धधर्म मूलतः अनीश्वरवादी है। इसमें आत्मा की परिकल्पना भी नहीं है।
- त्रष्णा को क्षीण हो जाने की अवस्था को ही बुद्ध ने निर्वाण कहा है।
- विश्व दुखों से भरा है का सिद्धान्त बुद्ध ने उपनिषद से लिया।
- उपासकः गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए बौद्ध धर्म अपनाने वालों को उपासक कहा गया है।
- बौद्ध संघ में सम्मिलित होने के लिए न्यूनतम आयु सीमा 15 वर्ष थी। बौद्ध संघ में प्रविष्ट होने वाले को उपसम्पदा कहा जाता था।
- सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण गंधार शैली के अंतर्गत किया गया लेकिन बुद्ध की प्रथम मूर्ति संभवतः मथुरा कला के अंतर्गत बनी थी।
- भारत में उपासना की जाने वाली प्रथम मूर्ति संभवतः बुद्ध की थी।
- **जैन धर्म**
- जैन शब्द का निर्माण जिन से हुआ है जिसका अर्थ होता है - विजेता
- संस्थापक - ऋषभदेव प्रथम तीर्थकर थे

कुल 24 तीर्थकर हुए

- 23वें- तीर्थकर पार्श्वनाथ थे जो काशी के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे।
- जैन धर्म को व्यवस्थित रूप दिया।
- 24वें-तीर्थकर वर्धमान महावीर थे।
- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी थे।
- जन्म 540 ई.पू. कुण्डग्राम (वैशाली) में हुआ था।
- महावीर के बचपन का नाम वर्धमान था।
- पिता - सिद्धार्थ ज्ञात्रक कुल के सरदार थे।
- माता - त्रिशला लिच्छवि राजा चेटक की बहन थी।
- अणुव्रत सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है।
- जैन धर्म में संवर का क्या अभिप्राय जीव की ओर नये कर्म का प्रवाह रुक जाना है।
- महावीर की पत्नी का नाम यशोदा एवं पुत्री का नाम अनोज्जा प्रियदर्शनी था।
- गृहत्याग 30 वर्ष की आयु में
- 12 वर्षो की कठिन तपस्या के बाद महावीर को ब्राम्भिक के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर

बख्तियार खिलजी के ही सैन्य अधिकारी अलिमर्दान ने मुहम्मद गौरी की हत्या कर दी।

- कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1195 ई. में अन्हिलवाड़ा के शासक भीम द्वितीय पर आक्रमण किया लेकिन ऐबक पराजित हुआ।
- 1203 ई. में ऐबक ने चंदेल शासक परमर्दिदेव से कालिंजर को जीत लिया था।

मुहम्मद गौरी की मृत्यु

- 1206 ई. में मुहम्मद गौरी ने पंजाब के खोखर जनजाति के विद्रोह को दबाने के लिए भारत पर अंतिम आक्रमण किया।
- गौरी ने लक्ष्मी की आकृति वाले कुछ सिक्के चलाये।

अध्याय – 2

दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश

गुलाम वंश से लेकर लोदी वंश

दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत के क्रमानुसार पाँच वंश निम्नलिखित थे -

गुलाम वंश के शासक -

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई. तक)

- भारत में तुर्की राज्य /दिल्ली सल्तनत /मुस्लिम राज्य की स्थापना करने वाला शासक ऐबक ही था।
- गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 ई. में की थी। इसने अपनी राजधानी लाहौर में बनाई।
- ऐबक का अर्थ होता है चंद्रमुखी।
- ऐबक के राजवंश को कुतुबी राजवंश के नाम से जन जाता है।
- मुहम्मद गौरी ने ऐबक को अमीर-ए-आखूर अस्तबलों का प्रधान के पद पर नियुक्त किया।
- 1192 ई. के तराईन के युद्ध में ऐबक ने गौरी की सहायता की।
- तराईन के द्वितीय युद्ध के बाद गौरी ने ऐबक को अपने मुख्य भारतीय प्रदेशों का सूबेदार नियुक्त किया।
- जून 1206 में राज्याभिषेक करवाया तथा सुल्तान की बजाय मलिक/सिपहसालार की उपाधि धारण की यह उपाधि इसे मुहम्मद गौरी ने दी थी।
- इसने अपने नाम के सिक्के भी नहीं चलाये एवं अपने नाम का खुतबा पढ़वाया (खुतबा एक रचना होती थी जो मौलवियों से सुल्तान शुक्रवार की रात को नजदीक की मस्जिद में अपनी प्रंशसा में पढ़वाते थे।)खुतबा शासक की संप्रभूता का सूचक होता था।
- ऐबक ने प्रारंभ इंद्रप्रस्थ में दिल्ली के पास को सैनिक मुख्यालय बनाया तथा कुछ समय बाद यल्दौज तथा कुबाचा (मुहम्मद गौरी के दास) के संघर्ष को देखते हुए लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- ऐबक ने यल्दौज पर आक्रमण कर गजनी पर अधिकार कर लिया, लेकिन गजनी की जनता

यल्दौज के प्रति वफादार थी तथा 40 दिनों के बाद ऐबक ने गजनी छोड़ दिया।

ऐबक की मृत्यु –

- 1210 ई. में लाहौर में चौगान पोलो खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की मौत हो गई। इसका मकबरा लाहौर में ही बनाया गया है।
- भारत में तुर्की राज्य का वास्तविक संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को मान जाता है।
- भारत में मुस्लिम राज्य का संस्थापक मुहम्मद गौरी को माना जाता है। स्वतंत्र मुस्लिम राज्य का संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक को माना जाता है।
- कुत्तुबुद्दीन ऐबक के दरबार में हसन् निजामी एवं फख-ए-मुदब्बिर आदि प्रसिद्ध विद्वान थे।
- 'कुव्वत-उल-इस्लाम -''अढ़ाई दिन का झोंपड़ा बनवाया। तथा 'कुतुबमीनार 'का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने शुरू करवाया और इल्तुतमिश ने पूरा किया। कुतुबमीनार शेख ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में बनवाया गया है।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को अपनी उदारता एवं दानी प्रवृति के कारण लाखबख्श (लाखों का दानी)कहा गया है।
- इतिहासकार मिन्हाज ने कुतुबुद्दीन ऐबक को उसकी दानशीलता के कारण हातिम द्वितीय की संज्ञा दी है।
- प्राचीन नालन्दा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करने वाला ऐबक का सहायक सेनानायक बख्तियार खिलजी था।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.)

- मलिक शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ऐबक का दामाद था, न कि उसका वंशज। इल्तुतमिश का शाब्दिक अर्थ राज्य का रक्षक स्वामी होता है।। उसका समानार्थक शब्द आलमगीर या जहाँगीर विश्व विजेता भी होता है।
- ऐबक की मृत्यु के समय इल्तुतमिश बदायूँ यू.पी. का इक्तेदार था।
- इल्तुतमिश दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक तथा प्रथम वैधानिक सुल्तान था। जिसने दिल्ली को अपने राजधानी बनाया।
- इसने 1229 ई. में बगदाद के खलीफा अल-मुंतसिर-बिल्लाह से सुल्तान की उपाधि व खिलअत इजाजत प्राप्त की।
- इल्तुतमिश ने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया तथा मानक सिक्कें टंका चलाया था। टंका चांदी का होता था (1 टंका =48 जीतल)
- इल्तुतमिश यह पहला मुस्लिम शासक था जिसने सिक्कों पर टकसाल का नाम अंकित करवाया था।
- शहरों में इल्तुतमिश ने न्याय के लिए काजी, अमीर-ए-दाद जैसे अधिकारी नियुक्त किये।
- इल्तुतमिश ने अपने 40 तुर्की सरदारों को मिलाकर तुर्कान-ए-चहलगामी नामक प्रशासनिक संस्था की स्थापना की थी।

इक्ता प्रणाली का संस्थापक -

- इल्तुतमिश ने प्रशासन में इक्ता प्रथा को भी स्थापित किया। भारत में इक्ता प्रणाली का संस्थापक इल्तुतमिश ही था। इक्ता का अर्थ है – धन के स्थान पर तनख्वाह के रूप में भूमि प्रदान करना।
- इसने दोआब गंगा-यमुना क्षेत्र में हिन्दुओं की शक्ति तोड़ने के लिए शम्सीतुर्की उच्च वर्ग सरदारों को ग्रामीण क्षेत्र में इक्तायें जागीर बांटी।
- 1226 में रणथंभौर पर आक्रमण
- 1227 में नागौर पर आक्रमण
- 1232 में मालवा पर आक्रमण - इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश उज्जैन से विक्रमादित्य की मूर्ति उठाकर लाया था।
- 1235 में ग्वालियर का अभियान -इस अभियान के दौरान इल्तुतमिश ने अपने पुत्रों की बजाय पुत्री रजिया को उत्तराधिकारी घोषित किया।
- 1236 ई. में बामियान अफगानिस्तान पर आक्रमण। यह इल्तुतमिश का अंतिम अभियान था।
- इल्तुतमिश पहला तुर्क सुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के चलाये।
- इल्तुतमिश के दरबार में मिन्हाज-उस-सिराज मलिक दाजुद्दीन को संरक्षण मिला।
- अजमेर की मस्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था।
- इल्तुतमिश से सम्बन्धित 'हश्म-ए-कल्ब 'या कल्ब-ए-सुल्तानी सुल्तान द्वारा स्थापित सेना को कहा जाता था।
- इल्तुतमिश को भारत में गुम्बद निर्माण का पिता कह जाता है उसने सुल्तानगढ़ी का निर्माण करवाया।

निर्माण कार्य-

- स्थापत्य कला के अन्तर्गत इल्तुतमिश ने कुतुबुद्दीन ऐबक के निर्माण कार्य कुतुबमीनार को पूरा करवाया। भारत में सम्भवतः पहला मकबरा निर्मित करवाने का श्रेय भी इल्तुतमिश को दिया जाता है ।
- इल्तुतमिश ने बदायूँ की जामा मस्जिद एवं नागौर में अतारकिन के दरवाजा का निर्माण करवाया। उसने दिल्ली में एक विद्यालय की स्थापना की।

मृत्यु -

- बयाना पर आक्रमण करने के लिए जाते समय मार्ग में इल्तुतमिश बीमार हो गया। इसके बाद इल्तुतमिश की बीमारी बढ़ती गई। अन्ततः अप्रैल 1236 में उसकी मृत्यु हो गई।
- इल्तुतमिश प्रथम सुल्तान था, जिसने दोआब के आर्थिक महत्व को समझा था और उसमें सुधार किया था।
- इल्तुतमिश का मकबरा दिल्ली में स्थित है जो एक कक्षीय मकबरा है ।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई).

- सुल्ताना रजिया (उसका पुरा नाम जलॉलात उद-दिन-रजिया था)का जन्म -1205 ई. में बदायूँ में हुआ था, उसने उमदत -उल -निस्वाँ की उपाधि ग्रहण की ।
- रजिया ने पर्दा प्रथा को त्यागकर पुरुषों के समान काबा चोगा पहनकर दरबार की कारवाई में हिस्सा लिया।
- दिल्ली की जनता ने उसे 'रजिया सुल्तान' मानकर दिल्ली की गद्दी पर बैठा दिया। हालांकि वजीर जुनैदी उससे प्रसन्न नहीं था इसलिए इस समय उसने ही रजिया के सिंहासनारोहरण का विरोध किया। रजिया ने उसके बाद वजीर का पद ख्वाजा मुहाजबुद्दीन को दिया।
- वह दिल्ली सल्तनत की पहली एवं आखिरी मुस्लिम महिला शासिका थी।
- 'सुल्तान रजियत अल दुनिया वाल दीन बिन्त अल सुल्तान' के रूप में सिक्के ढ़ाले गये।
- शासक बनने पर रजिया ने उदमत-उल-निस्वां की उपाधि धारण की।
- रजिया ने प्रथम अभियान 'रणथम्भौर' पर किया तदुपरान्त ग्वालियर पर हमला किया गया। हालांकि दोनों अभियान असफल रहे।
- रजिया ने महिला वस्त्र त्यागकर पुरुषों के वस्तु काबा (कुर्ता) एवं कुलाह(पगड़ी) धारण करने लगी।
- रजिया ने अल्तुनिया से शादी कर ली। अक्टूबर 1240 ई. में कैथल में डकैतों ने रजिया एवं अल्तुनिया की हत्या कर दी। और इस तरह 3 वर्ष 6 माह और 6 दिन तक शासन करने वाली रजिया का अन्त हुआ।''

मुइजुद्दीन बहरामशाह (1240-1242 ई)

- बहरामशाह एक मुस्लिम तुर्की शासक था, जो दिल्ली का सुल्तान था। बहरामशाह गुलाम वंश का था। रजिया सुल्तान को अपदस्थ करके तुर्की सरदारों ने मुइजुद्दीन बहराम शाह को दिल्ली के तख्त पर बैठाया (1240-1242 ई)
- यह इल्तुतमिश का पुत्र तथा रजिया का भाई था।

अलाउद्दीन मसूद शाह (1242-1246 ई)

- मसूद का शासन तुलनात्मक दृष्टि से शांतिपूर्ण रहा। इस समय सुल्तान तथा सरदारों के मध्य संघर्ष नहीं हुए।
- वास्तव में यह काल बलबन की 'शांति निर्माण' का काल था।

नासिरुद्दीन महमूद (1246-1265 ई)

- यह एक तुर्की शासक था, जो दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना। यह भी गुलाम वंश से था।
- महमूद के शासनकाल में समस्त शक्ति बलबन के हाथों में थी। प्रारंभ में बलबन चहलगामी का सदस्य था।
- बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह नासिरुद्दीन महमूद से कर दिया। सुल्तान ने बलबन को सेना पर पूर्ण नियंत्रण के साथ नायब-ए-ममलिकात का पद दिया।
- सद्र-उस-सुदूर धार्मिक विभाग से संबंधित है ।
- अमीर-एक-आखूर अश्वशाला का प्रधान होता था ।
- सर-ए-जानदार सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रमुख होता था ।

ग्यासुद्दीन बलबन 1266-1287

- बलबन ने बलबनी वंश की स्थापना की ।

ग्यासुद्दीन तुगलक के समय हुये आक्रमण

- इसके समय 1323 ई में पुत्र जौंना खाँ (मुहम्मद बिन तुगलक) ने वारंगल पर आक्रमण किया लेकिन असफल रहा। इस समय वारंगल का शासक प्रताप रुद्रदेव था।
- 1324 ई. में जौंना खाँ ने वारंगल पर पुनः आक्रमण किया इसे (वारंगल) जीतकर इसका नाम तेलंगाना/सुल्तानपुर रखा।
- ग्यासुद्दीन तुगलक का अंतिम सैन्य अभियान बंगाल की गड़बड़ी को समाप्त करना था, क्योंकि बलबन के लड़के बुगरा खाँ ने बंगाल को स्वतंत्र घोषित कर दिया था।
- 1324 ई. में ग्यासुद्दीन ने बंगाल का अभियान किया तथा नासिरुद्दीन को पराजित कर बंगाल के दक्षिण एवं पूर्वी भाग को सल्तनत में मिलाया तथा उत्तरी भाग पर नासिरुद्दीन को अपने अधीन शासक घोषित किया।
- ग्यासुद्दीन तुगलक दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने अपने नाम के साथ 'गाजी' (काफिरों का वध करने वाला) शब्द जोड़ा।
- शेख निजामुद्दीन औलिया ने ग्यासुद्दीन तुगलक से कहा था की "हुनूज दिल्ली दूर अस्त अर्थात् दिल्ली अभी बहुत दूर है।

ग्यासुद्दीन तुगलक के द्वारा निर्माण कार्य

- इसने दल्ली के समीप तुगलकाबाद नामक नगर की स्थापना की।
- दिल्ली में मजलिस-ए-हुक्मरान की स्थापना की।
- तुगलकाबाद में रोमन शैली में एक दुर्ग का निर्माण किया जिसे छप्पन कोट के नाम से जाना जाता है।

ग्यासुद्दीन की मृत्यु

- 1325 ई. में बंगाल विजय के बाद वापिस दिल्ली लौटते समय दिल्ली से कुछ दूर जौंना खाँ द्वारा सुल्तान के स्वागत के लिए बनाये गये लकड़ी के महल से गिर जाने से सुल्तान की मृत्यु हो गयी।

नोट - ग्यासुद्दीन तुगलक ने लगभग सम्पूर्ण दक्षिण भारत को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया था।
हक-ए-शर्ब कर सिंचाई पर लगाया जाता है।

मुहम्मद बिन तुगलक -Muhammad bin Tughlaq (1325-51 ई.)

- दिल्ली सल्तनत में सबसे अधिक लंबे समय तक शासन तुगलक वंश ने किया, तथा सल्तनत के सुल्तानों में सर्वाधिक विस्तृत साम्राज्य मोहम्मद बिन तुगलक का था
- मुहम्मद बिन तुगलक का साम्राज्य 23 प्रांतों में बंटा हुआ था मुहम्मद बिन तुगलक के समय साम्राज्य का विस्तार हुआ। सल्तनत काल में सबसे बड़ा साम्राज्य विस्तार इसी का था।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने मुस्लिम राजस्व का सिद्धांत दिया तथा अपने सिक्कों पर अल-सुल्तान-जिल्ले-इलाही अंकित कराया।
- मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल के प्रमुख स्त्रोत-
- जियाउद्दीन बरनी द्वारा लिखित पुस्तक तारीख ए फिरोजशाही
- इब्नबतूता का यात्रा वृतांत (रिहला)
- मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी बहुसंख्यक हिन्दू प्रजा के साथ सहिष्णुता का व्यवहाँ र किया।
- मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने योग्यता के आधार पर लोगो को नियुक्त किया।
- मुहम्मद बिन तुगलक का एक हिन्दू मंत्री साईराज था तथा दक्षिण का नायब वजीर धारा भी हिन्दू था।
- होली के त्यौंहार में भाग लेने वाला दिल्ली सल्तनत का प्रथम शासक मुहम्मद बिन तुगलक था।
- 1336 ई में हरिहर प्रथम व बक्का प्रथम ने विजयनगर को स्वतंत्र कराया। तथा विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।
- 1347 ई में अलाउद्दीन बहमन शाह (हसन् कांगू) ने बहमनी राज्य (महाराष्ट्र) को स्वतंत्र कराया तथा बहमनी राज्य की स्थापना की।
- इसके शासनकाल में कान्हा नायक ने विद्रोह कर स्वतंत्र वारंगल राज्य की स्थापना की।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने देवगिरी को अपनी राजधानी बनाया। तथा देवगिरी का नाम परिवर्तित कर मुहम्मद बिन तुगलक ने दौलताबाद कर दिया।
- मुहम्मद तुगलक ने कृषि के विकास हेतु '"अमीर-ए-कोही" नामक एक नए विभाग की स्थापना की।
- मुहम्मद बिन तुगलक को इतिहास में एक "बुद्धिमान मुर्ख शासक" के रूप में जाना जाता है।
- कहा जाता है की डाक प्रबन्धों के द्वारा मुहम्मद तुगलक के लिए ताजे फल (खुरासान से)एवं पिने के लिए गंगाजल मंगवाया जाता था।
- एडवर्ड थॉमस ने मुहम्मद बिन तुगलक को प्रिंस ऑफ़ मनीअर्स की संज्ञा दी।

- मुहम्मद बिन तुगलक ने जैन प्रभू सूरी नामक जैन साधू को अपने दरबार में बुलाकर सम्मान प्रदान किया था।
- मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु पर इतिहासकार "बंदायूनी लिखता है की अंततः लोगों को उससे मुक्ति मिली और उसे लोगों से "
- मुहम्मद बिन तुगलक शेख अलाउद्दीन का शिष्य था। वह सल्तनत का पहला शासक था, जो अजमेंर में शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह और बहराइच में सालार मसूद गाजी के मकबरे पर गया था।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने बदायूँ में मीरन मुलहीम, दिल्ली में शेख निजामुद्दीन औलिया, मुल्तान में शेख रुकनुद्दीन, अजुधन में शेख मुल्तान आदि संतों की कब्र पर मकबरे बनवाये।
- मुहम्मद बिन तुगलक के समय जिया नक्शबी पहला व्यक्ति था जिसने संस्कृत कथाओं की एक श्रृंखला का फारसी में अनुवाद किया था। इस पुस्तक का नाम टूती नामा था जिसमें एक तोता एक ऐसी विरहिणी नायिका को कहानी सुनाता है, जिसका पति यात्रा पर गया है।
- मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु 20 मार्च, 1351 ई. को सिन्ध जाते समय थट्टा के निकट गोडाल में हो गयी।

फिरोज तुगलक

- फिरोज तुगलक का राज्याभिषेक थट्टा के निकट 20 मार्च 1351 को हुआ, पुन : फिरोज का राज्याभिषेक दिल्ली में अगस्त 1351 को हुआ।
- खलीफा द्वारा इसे कासिम अमीर उल मोममीन की उपाधि दी गयी।
- बंगाल-फिरोज ने 1353 एवं 1359 ई. में दो बार बंगाल पर असफल अभियान किया।
- जाजनगर (ओडिसा) -1360 ई.- फिरोज ने पुरी के जगन्नाथ मंदिर को लूटा।
- नगरकोट-1361 ई - फिरोज ने काँगड़ा में स्थित नगरकोट पर आक्रमण किया। फिरोज ने यहाँ के ज्वालामुखी मंदिर को लूटा और यहाँ की मुख्य मूर्ति को मदीना भिजवा दिया। यही से 1300 संस्कृत की किताबों को पाया जिसका उसने फारसी में अनुवाद कराया था।
- थट्टा अभियान-1362 ई फिरोज तुगलक का अन्तिम अभियान सिन्ध के थट्टा पर हुआ।
- फिरोज तुगलक ब्राह्मणों पर जजिया लागू करने वाला पहला मुसलमान शासक था फिरोज तुगलक ने एक नया कर सिचाई कर भी लगाया, जो उपज का 1/10 भाग था।
- फिरोज तुगलक ने पांच बड़ी नहरों का निर्माण करवाया था।
- फिरोज तुगलक ब्राह्मणों पर जजिया लागू करने वाला पहला मुसलमान शासक था। एलिफिस्टन ने फिरोजशाह तुगलक को सल्तनतकाल का अकबर कहा है।
- सल्तनतकालीन सुल्तानों के शासन काल में सबसे अधिक दासों की सख्यां करीब 1,80000 फिरोज तुगलक के समय थी।
- दासों की देखभाल के लिए फिरोज तुगलक ने एक नए विभाग दीवान ए बंदगान की स्थापना की। इसने सैन्य पदों को वंशानुगत बना दिया।
- फिरोज तुगलक ने चाँदी एवं ताम्बे के मिश्रण से निर्मित सिक्के भारी संख्या में जारी करवाए, जिसे अध्दा एवं विख कहा जाता था।
- फिरोज तुगलक के काल में निर्मित खान-ए-जहाँ तेंलगानी के मकबरे की तुलना जेरुसलम में निर्मित उमर के मस्जिद से की जाती है।

फिरोज तुगलक द्वारा स्थापित विभाग –

1. दीवान-ए-इस्तिहाक - पेंशन विभाग
2. दीवान-ए-खैंरात - दान विभाग
3. दीवान-ए-बंदगान - दास विभाग

फिरोजशाह तुगलक द्वारा बनायी गयी पांच नहरें

1. यमुना नदी से हिसार तक
2. सतलज नदी से घग्घर नदी तक
3. सिरमौर की पहाड़ी से हांसी तक
4. घग्घर से फिरोजाबाद तक
5. यमुना से फिरोजाबाद तक

संरक्षण

- बरनी ने 'फ़तवा-ए-जहाँदारी' एवं 'तारीख़-ए- शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में सुल्तान फ़िरोज़ ने अनेक मक़बरों एवं मदरसों की स्थापना करवायी। उसने जियाउद्दीन बरनी' एवं 'शम्स-ए-सिराज अफीफ' को अपना संरक्षण प्रदान किया।
- फिरोज तुगलक ने फिरोज़शाही' की रचना की।
- फिरोज़ ने अपनी आत्मकथा 'फतूहात-ए-फिरोज़शाही' की रचना की।

भारत-पाक सीमा	3323 किमी.
भारत - नेपाल सीमा	1751 किमी.
भारत - म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत - भूटान सीमा	699 किमी.
भारत – अफगानिस्तान	106 किमी. (वर्तमान में POK में स्थित है)

अध्याय – 2

भौतिक विभाजन

- भारत की स्थलाकृति को पांच भागों में बाँटा जा सकता है/
  - उत्तर भारत का पर्वतीय क्षेत्र
  - प्रायद्वीपीय पठार
  - मध्यवर्ती विशाल मैदान
  - तटवर्ती मैदान
  - द्वीप समूह

- **पर्वत**

I. उत्तर भारत का विशाल पर्वतीय क्षेत्र

- यह विश्व की सर्वोच्च पर्वतीय स्थलाकृति है, जिसका विस्तार भारत के पश्चिम से लेकर पूर्व तक है/
- इस पर्वतीय श्रेणी को तीन भागों में बाँटा जा सकता है /
  1.ट्रांस हिमालय श्रेणी
  2.हिमालय पर्वत श्रेणी
  3.पूर्वांचल की पहाड़ियों
- **ट्रांस हिमालय** का निर्माण हिमालय से भी पहले हो चुका था इसके अन्तर्गत काराकोरम लद्दाख कैलाश व जास्कर श्रेणी आती है ।
- इन श्रेणियों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।
- काराकोरम श्रेणी - यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।
- भारत की सबसे ऊंची चोटी k2 या गाडविन ऑस्टिन (8611 m) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।
  - यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है/
  - काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रा में स्थित है
  - काराकोरम दर्रा काराकोरम श्रृंखला पर स्थित कश्मीर को चीन से जोड़ने वाला संकीर्ण दर्रा है/
  - काराकोरम श्रृंखला पर भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है ।
  - विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा (सियाचिन) यहीं अवस्थित है ।
  - काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख हिमनद (ग्लेशियर) स्थित हैं।

- सियाचिन (72 km)
- बाल्टोरो - (58km)
- बीयाफो – 63 km
- हिस्पर (61 Km)

(B) **लद्दाख श्रेणी** - विश्व की सबसे बड़ी ढाल वाली चोटी राकापोशी लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है ।

- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलाश श्रेणी के रूप में स्थित है। यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- यह भारत का न्यूनतम वर्षा वाला क्षेत्र है ।
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलाश है ।

(C) जास्कर श्रेणी - यह ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी हैं

- नंगा पर्वत इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणीयों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है।

1. **बृहद् या हिमाद्रि या महान हिमालय** - इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरवा पर्वत तक धनुष की आकृति में फैला हुआ है जिसकी कुल लम्बाई 2500 km तक है तथा औसत ऊँचाई 6100 मी. तक है। विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ इसी श्रेणी पर पाई जाती है जिसमें प्रमुख है-

- माउंट एवरेस्ट (8848 मी.) विश्व की सबसे ऊँची चोटी
- कंचनजंगा (8598 मी.)
- मकालू (8481 मी.)
- धौलागिरी (8172 मी.)
- अन्नपूर्णा (8076 मी.)
- नंदा देवी (7817 मी.)

- एवरेस्ट को पहले तिब्बत में 'चोमोलुगंमा'के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ 'पर्वतो की रानी'।
- हिमालय का निर्माण भारतीय सह – ऑस्ट्रलियाई प्लेट एवं यूरोशियाई प्लेट की अभिसरण प्रक्रिया से हुआ है ।
- एवरेस्ट, कंचनजंगा, मकालू, धौलागिरि, नंगा पर्वत , नामचा बरवा इसके महत्त्वपूर्ण शिखर है/
- भारत में हिमालय की सर्वोच्च ऊँची चोटी कंचनजंगा यही स्थित है/
- यह विश्व की तीसरी सबसे ऊँची चोटी है/

2. **लघु या मध्य हिमालय**-

- महान हिमालय के दक्षिण में तथा शिवालिक के उत्तर में इसका विस्तार है। इसकी सामान्य ऊँचाई 3700 से 4500 मी. है/
- इसके अन्तर्गत कई श्रेणियाँ पाई जाती हैं।

- पीर पंजाल (जम्मू कश्मीर)
- धौलाधार (हिमाचल प्रदेश)
- नाग टिब्बा (उत्तराखंड)
- कुमायूँ (उत्तराखंड)
- महाभारत (नेपाल)

- लघु हिमालय तथा महान हिमालय के बीच कई घाटियों का निर्माण हुआ है ।

- कश्मीर की घाटी (जम्मू कश्मीर)
- कुल्लू - काँगड़ा घाटी (हिमाचल प्रदेश)
- काठमांडू घाटी (नेपाल)

- लघु हिमालय अपने स्वास्थ्यवर्धक पर्यटन स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है जिसके अन्तर्गत शामिल है –
- कुल्लू, मनाली, डलहौजी, धर्मशाला, शिमला (हिमाचल प्रदेश) अल्मोड़ा, मसूरी, चमोली (उत्तराखंड)
- लघु हिमालय की श्रेणीयों की ढालों पर शीतोष्ण घास के मैदान पाये जाते है जिन्हे जम्मू-कश्मीर में मर्ग (गुलमर्ग, सोनमर्ग) व उत्तराखंड में 'बुग्याल व पयार' कहा जाता है।

<u>शिवालिक या बाह्य हिमालय</u>

- मध्य हिमालय के दक्षिण में शिवालिक हिमालय की अवस्थिति को बाह्य हिमालय के नाम से जानते हैं ।
- यह लघु हिमालय के दक्षिण में स्थित है।
- शिवालिक और लघु हिमालय के बीच स्थित घाटियों को पश्चिम में दून (जैसे- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून) व पूर्व में द्वार (जैसे- हरिद्वार) कहते हैं।
- शिवालिक को जम्मू कश्मीर में कश्मीर पहाड़ियाँ तथा अरुणाचल प्रदेश में डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी की पहाड़ियो के नाम से जाना जाता है।

चोस- (Chos)

- शिवालिक से पंजाब व हिमाचल प्रदेश में छोटी-छोटी धाराएँ निकलती हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहा जाता है।
- ये धाराएँ शिवालिक का अपरदन कर देती है एवं शिवालिक को कई भागो बाँट देती हैं ।

करेवा

पीरपंजाल श्रेणी के निर्माण के समय कश्मीर घाटी में कुछ अस्थायी झीलों का निर्माण हुआ जो नदियों के द्वारा लेकर आए अवसाद के कारण ये झीलें अवसाद से भर गई।

ऐसे उपजाऊ क्षेत्रों में जाफरन / केसर की खेती की जाती है जिन्हें करेवा कहा जाता है।

ऋतु प्रवास

जम्मू और कश्मीर में रहने वाली जनजातियों गुज्जर, बकरवाल, झुकिया, भूटिया इत्यादि मध्य हिमालय में बर्फ के पिछलने के उपरान्त निर्मित होने वाले घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराने के लिए प्रवास करते हैं तथा ये पुनः सर्दियों के दिनों में मैदानी भागों में आ जाते हैं जिसे ऋतु प्रवास कहा जाता है।

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ

पूर्वांचल की पहाड़ियाँ हिमालय का ही विस्तार हैं नामचा बरवा के निकट हिमालय अक्षसंधीय मोड़ के कारण दक्षिण की ओर मुड़ जाता है। पटकाईबुम, नागा, मणिपुर, लुशाई, या मिजो पहाड़ी आदि हिमालय का विस्तार बन जाता हैं यह पहाड़ियाँ भारत एवं म्यांमार सीमा पर स्थित हैं/

- नागा पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी माउंट सरमाटी (3826 मीटर) है।
- मिजो पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी ब्लू माउंट है
- पूर्वांचल की पहाड़िया काफी कटी - फटी हैं
- गारो खासी एवं जयंतिया पहाड़ी शिलांग के पठार पर अवस्थित हैं/
- पूर्वांचल की पहाड़ियाँ भारतीय मानसून को दिशा प्रदान करती हैं
- इस तरह यह पहाड़ियाँ जल विभाजक के साथ - साथ जलवायु विभाजक हैं।

भारत के प्रमुख दर्रे

- हिमालय विश्व की सबसे ऊँची पर्वतमाला हैं
- इन पर्वतमाला की कुछ दर्रे इस प्रकार हैं –

1. पश्चिमी हिमालय के दर्रे
2. पूर्वी हिमालय के दर्रे
3. पश्चिमी घाट के दर्रे

पश्चिमी हिमालय के दर्रे : -

काराकोरमः - यह काराकोरम श्रेणी मे अवस्थित है, जो उत्तर में स्थित है। इसकी ऊँचाई 5000 मी. है और भारत के लद्दाख को चीन के शिंजियांग प्रान्त से मिलाता है/

चांगला : - यह लद्दाख को तिब्बत से मिलाता है, यह शीत ऋतु में हिमपाद के लिए बंद रहता है/

बनिहाल : - यह पीरपंजाल श्रृंखला में स्थित है / इसी में जवाहर सुरंग स्थित है /

लानक ला : - लद्दाख के चीन अधिकृत अक्साई चीन में स्थित है और तिब्बत की राजधानी तथा लद्दाख के बीच सम्पर्क बनाता है/

बरालाचा ला :- यह मंडी और लेह को आपस में जोड़ता है इसी से मनाली – लेह सड़क गुज़रता है / यह शीत ऋतु बंद रहता है

पीरपंजाल : - यह पीरपंजाल पर्वत श्रेणी में स्थित है जम्मू से श्रीनगर जाने का मार्ग है लेकिन आजादी के बाद इसे बंद कर दिया गया है /

जोजिला : - यह श्रीनगर, कारगिल एवं लेह के बीच संपर्क को स्थापित करता है इसके महत्त्व को देखते हुए श्रीनगर जोजिला सड़क को राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित किया गया है/

खारदुंग ला :- यह जम्मू - कश्मीर के काराकोरम पर्वत श्रेणी में छः हजार मीटर से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित है इसी में भारत की सबसे ऊँची सड़क स्थित है /

थांग ला : -इस दर्रे से देश की दूसरी सबसे ऊँची सड़क गुज़रती है।

रोहतांग :- यह हिमाचल के लौह और स्पीति के बीच में संपर्क बनाता है /

शिपकी ला : -यह झेलम महाखंड पर छः हजार मीटर से अधिक की ऊँचाई पर स्थित है जो हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से मिलाता है /

लिपु लेख : - यह उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है / यह उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में अवस्थित है / इस पर उत्तराखंड, चीन, और नेपाल के ट्राई – जंक्शन स्थित है। इसी से कैलाश मानसरोवर की यात्रा सम्पन्न होता है/

माना : - यह भी उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है जो बद्रीनाथ मंदिर से कुछ ही दूर स्थित है

नीति :- यह भी उत्तराखंड और तिब्बत के जोड़ता है जो नवम्बर से लेकर मई तक बंद रहता है/

2. पूर्वी हिमालय के दर्रे : -

नाथू ला : - यह सिक्किम (भारत) – चीन सीमा पर स्थित है जो लगभग 4310 मी. की ऊँचाई पर

भूड़ –

- बांगर प्रदेशों में जब ऊपर की चिकनी मिट्टी नष्ट हो जाए तथा कंकड़ युक्त मृदा शेष बचे तो ऐसी मृदा को भूड़ कहते हैं।

डेल्टा –

जब नदी अपने मुहाने के निकट पहुँचती है तो ढाल कम होने के कारण नदियों का प्रवाह मंद हो जाता है जिससे नदी कई वितरिकाओं में विभाजित हो जाती हैं, तथा ये वितरिकाएँ अपने साथ लायी गई मृदा को आगे ले जाने में अक्षम होती हैं।
जिससे समुद्री तटों पर ये मृदा का निक्षेपण करता है।

पुलिन (Beach) : पुलिन सागरीय तट का उथला भाग कहलाता है। इसकी आकृति अर्द्धचंद्राकार होती है। सागरीय तटों पर अवसाद रेत जमा होते रहने से पुलिन का निर्माण होता है।

- **पठार**

2. प्रायद्वीपीय पठार –

- यह विश्व का प्राचीनतम पठार है जो 16 लाख वर्ग. कि. मी. क्षेत्र में फैला हुआ है यह आर्कियन चट्टानों से निर्मित पठार है अरावली, राजमहल, कैमूर, व शिलांग की पहाड़ियाँ इसकी उत्तरी सीमा बनाती है तथा दक्षिण में कन्याकुमारी तक विस्तृत है।
- **मालवा का पठार –** मालवा का पठार उत्तर में अरावली पर्वत, दक्षिण में विन्ध्य श्रेणी व पूर्व में बुन्देलखण्ड से घिरा हुआ है।
- चम्बल नदी जो यमुना नदी की सहायक नदी है मालवा पठार से ही निकली है।
- **बुन्देलखण्ड का पठार**- इसके उत्तर में यमुना नदी दक्षिण में विन्ध्य श्रेणी उत्तर पश्चिम में चम्बल नदी व दक्षिण पूर्व में बघेलखण्ड पठार स्थित है।
- इसके अन्तर्गत उत्तर प्रदेश का बांदा, हमीरपुर, ललितपुर तथा मध्यप्रदेश का दतिया छतरपुर पन्ना जिले आते है।
- **बघेलखण्ड का पठार** -इसके अन्तर्गत मध्यप्रदेश का सतना व रीवा जिला शामिल है तथा उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर का कुछ भाग आता है।
- **छोटानागपुर का पठार** - इसका विस्तार मुख्यतः झारखण्ड राज्य में है। राजमहल की पहाड़ियाँ इसकी उत्तरी सीमा बनाती है। महानदी इसकी दक्षिणी व सोन नदी इसके उत्तर पश्चिम से बहती है।
- छोटानागपुर का पठार खनिज संसाधन में धनी है।
- **दण्डकारण्य का पठार**- दक्षिण छत्तीसगढ़ व उड़ीसा के कुछ भाग में इसका विस्तार है।
- **दक्कन का लावा पठार** -दक्षिण भारत में क्रिटेशियस काल में दरारों से निकले लावा के फलस्वरूप इस पठार का निर्माण हुआ है इसका मुख्यतः विस्तार महाराष्ट्र में देखनें को मिलता है।
- **मेघालय या शिलांग का पठार** -यह पठार प्रायद्वीपीय पठार का विस्तार है। इस पठार के अन्तर्गत गारो खासी जयन्तियाँ तीन मुख्य पहाड़ियाँ आती है।

प्रायद्वीपीय पठार का महत्त्व

- भौगोलिक दृष्टि से दक्कन का पठार लम्बत संचालन करता है यहाँ अनेक जलप्रपात मिलते है। जिससे जलविद्युत का निर्माण हो सकता है एवं खण्डों के मिलने के कारण यहाँ तालाबों की अधिकता है जिससे सिंचाई कार्य संभव है।
- पठार के अपक्षय व अपरदन से काली मिट्टी का विकास हुआ है, जो कपास के खेती के लिए उपयुक्त होता है।
- पश्चिमी घाट पर अधिक वर्षा वाले समतल उच्च भाग पर लैटेराइट मिट्टी का विकास हुआ है जिन पर चाय कॉफी मसाला की कृषि होती है।
- पश्चिमी घाट पर अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में सदाहरित वन पाए जाते हैं।
- प्रायद्वीपीयं पठार भारत के अधिकांश खनिज संसाधनों की पूर्ति करता है।
- यहाँ की भू गर्भिक संरचना सोना तांबा लौहा कोयला यूरोनियम आदि खनिजों से आबाद है।
- दामोदर घाटी को भारत का रूर प्रदेश कहते हैं क्योंकि यह खनिज के बड़ा भण्डार है । तथा यह क्षेत्र कोयले से सम्पन्न है।

- **द्वीप**

- भारत में सबसे लंबी तट रेखा (Coast line) गुजरात राज्य की, फिर आंध्र प्रदेश राज्य की और फिर महाराष्ट्र राज्य की है।
- भारतीय सीमा में निम्नलिखित द्वीप समूह शामिल हैं–

प्रमुख द्वीप

अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह
लक्ष्यद्वीप
अन्य द्वीप

श्रीहरिकोटा
पंबन द्वीप
न्यू मूर द्वीप
अब्दुल कलाम द्वीप
माजुली द्वीप (नदी द्वीप)

अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह

- यह द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित है।
- अण्डमान समूह में 204 द्वीप है, जिनमें मध्य अण्डमान (Middle Andaman) सबसे बड़ा है।
- ये द्वीप समूह देश के उत्तर-पूर्व में स्थित पर्वत श्रृंखला का विस्तार है।
- उत्तर अण्डमान में स्थित कैंडल पीक (SadalesPeak) सबसे ऊँची (737 मीटर) चोटी है।
- निकोबार समूह में 19 द्वीप हैं जिनमें ग्रेट निकोबार सबसे बड़ा है।
- ग्रेट निकोबार सबसे दक्षिण में स्थित है और इण्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप से केवल 147 किमी. दूर है।
- बैरन (Barren) एवं नारकोंडम (Narcondami)ज्वालामुखीय द्वीप हैं जो अंडमान निकोबार द्वीप समूह में स्थित है।
- डंकन पैसेज (Duncan Passage) दक्षिण अण्डमान एवं लिटिल अण्डमान के बीच है।
- 10 डिग्री चैनल लिटिल अण्डमान एवं कार निकोबार के बीच है। यह अण्डमान को निकोबार से अलग करता है।

लक्ष्यद्वीप समूह

- ये द्वीप अरब सागर में स्थित है।
- इस समूह में 25 द्वीप हैं। ये सभी मूंगे के द्वीप
- (Coral Islands) हैं एवं प्रवाल भित्तियों (CoralReefs) से घिरे हैं।
- इनमें तीन द्वीप मुख्य हैं- लक्षद्वीप (उत्तर में), मिनीकॉय (दक्षिण में), कावारत्ती (मध्य में)।
- 9° डिग्री चैनल कावारत्ती को मिनीकॉय से अलग करती है।
- 8° डिग्री चैनल मिनीकॉय द्वीप (भारत) को मालदीव से अलग करता है।

अन्य द्वीप

- श्रीहरिकोटा
- यह आंध्रप्रदेश के तट पर स्थित है।
- इसी द्वीप में भारत का एकमात्र उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र 'सतीश धवन अंतिरक्ष' केंद्र स्थित है।

पंबन द्वीप

- यह मन्नार की खाड़ी में अवस्थित है
- यह 'आदम ब्रिज अथवा रामसेतु 'का ही भाग है जो भारत व श्रीलंका के बीच स्थित है।
- यहीं रामेश्वरम् स्थित है।

न्यू मूर द्वीप

- यह बंगाल की खाड़ी में भारत व बांग्लादेश की सीमा पर अवस्थित है जिसके कारण दोनों देशों में अधिकार को लेकर विवाद चलने के कारण बाँट लिया गया।
- भारत के हिस्से में आए भाग का अधिकांश भाग जलमग्न रहता है।

अब्दुल कलाम द्वीप

- यह ओड़िशा के तट पर स्थित है
- इसका प्रयोग भारत अपने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम के परिक्षण के लिए करता है।

माजुली द्वीप

- माजुली द्वीप दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है।
- जो असम के ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में है।
- यह अपनी जैव विविधता के लिए जाना जाता है।
- इस द्वीप को असम सरकार (2016) ने जिला घोषित किया है जिससे यह देश का पहला द्वीपीय जिला बन गया है।

तटवर्ती मैदान

- भारत में तटीय मैदान पश्चिम घाट के पश्चिम तथा पूर्वी घाट के पूर्व में स्थित हैं।
- यह तटों के सहारे- सहारे कच्छ की खाड़ी से लेकर पश्चिम बंगाल तक स्थित हैं।
- भारत के तटीय मैदान लगभग 6000 km. की दूरी में स्थित हैं इनका निर्माण नदियों के द्वारा किया गया हैं।
- पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा अधिक चौड़ा होता है।
- पूर्वी घाट का अधिक चौड़ा होने का कारण नदियों के द्वारा डेल्टा का निर्माण करना है।
- अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं।
- मालाबार तट पर लैगून झील पाए जाते हैं जिन्हें कयाल कहते हैं।

5. ऊर्जा गंगा परियोजना

- 24 अक्टूबर 2016 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी में केंद्र सरकार की अति महत्त्वाकांक्षी गैस पाइपलाइन परियोजना ऊर्जा गंगा का शिलान्यास किया।
- ऊर्जा गंगा परियोजना पूर्वी भारत के सात शहरों वाराणसी, राँची, कटक, पटना, कोलकाता, जमशेदपुर, भुवनेश्वर के लिए शहरी गैस वितरण परियोजना है।
- इस परियोजना में 2540 किमी. पाइपलाइन बिछाने का लक्ष्य रखा गया है
- राज्य द्वारा संचालित गैस यूटिलिटी – गैस ऑथोरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड इस परियोजना को क्रियान्वित कर रहा है।

अध्याय – 8

प्रमुख उद्योग और औद्योगिक विकास

- USA की सिलिकॉन वैली सेन-फ्रांसिस्को (उत्तरी कैलीफोर्निया) में स्थित है।
- ओसाका नगर जापानी सूती वस्त्र उद्योग (cotton textile industry) का प्रमुख केन्द्र है।
- सूती वस्त्र उद्योग के लिए आर्द्र जलवायु तथा समुद्री समीर उपयुक्त मानी जाती है।
- विश्व में सूती वस्त्र उत्पादक सबसे बड़ा देश चीन है।
- रुर बेसिन (ruhr basin) जर्मनी देश का प्रसिद्ध औद्योगिक क्षेत्र है।
- ऊन (wool) का सबसे बड़ा उत्पादक देश चीन है।
- विश्व में पोटाश उर्वरक का सर्वाधिक भंडार कनाडा देश में स्थित है।

औद्योगिक शहरों के उपनाम

औद्योगिक शहरों	उपनाम
गोर्की	रूस का डेट्रायट
पीथमपुर	भारत का डेट्रायट
ट्यूरिन	इटली का डेट्रायट
विंडसर	कनाडा का डेट्रायट
नागोया	जापान का डेट्रायट
शंघाई	चीन का मेनचेस्टर
अहमदाबाद	भारत का मेनचेस्टर
मिलान	इटली का मेनचेस्टर
ओसाका	जापान का मेनचेस्टर
कानपूर	उत्तर भारत का मेनचेस्टर
कोयम्बटूर	दक्षिण भारत का मेनचेस्टर
पिट्सवर्ग	विश्व की इस्पात नगरी
यावता	जापान का पीट्सबर्ग
टूला	रूस का पिट्सवर्ग
जमशेदपुर	भारत का पीट्सबर्ग
हैमिल्टन	कनाडा का बर्मिंघम

विश्व के प्रमुख औद्योगिक केंद्र

देश	लौह उद्योग के प्रमुख केंद्र
स.रा.अमेरिका	पीट्सबर्ग(विश्व की इस्पात राजधानी)
जापान	ओसाका, कोबे व क्योटो, नागासाकी, कावासाकी
रूस	मॉस्को, मैग्नीटोगोर्स्क, चेलियाविंस्क, टूला

देश	वस्त्र उद्योग के प्रमुख केंद्र
चीन	शंघाई, कैन्टन, वुहान, नानकिंग, चुगकिंग, बीजींग
ब्रिटेन	मेनचेस्टर, ब्रैडफोर्ड, डबीशायर, लीड्स
भारत	मुंबई, अहमदाबाद, कोलकाता, कोयम्बटूर, मदुरै

भारतीय उद्योग (Indian Industry)

I. स्वतंत्रता से पूर्व भारत में स्थापित उद्योग-

- लौह इस्पात उद्योगः- 1874 में कुल्टी (प. बंगाल) में पहला व्यवस्थित लौह इस्पात केन्द्र स्थापित किया गया ।
- **एल्युमिनियम उद्योगः-** 1837 में जे.के. नगर (प. बंगाल) में पहला एल्युमिनियम उद्योग स्थापित किया गया ।
- **सीमेन्ट उद्योगः-** भारत में प्रथम सीमेंट कारखाना वर्ष 1904 में गुजरात के पोरबंदर में स्थापित किया गया, परंतु सीमेंट का उत्पादन वर्ष 1904 में चेन्नई में स्थापित कारखाने में प्रारंभ हुआ ।
- **रसायनिक उद्योगः-** भारत में रसायनिक उद्योग की शुरूआत 1906 में रानीपेट (तमिलनाडु) में सुपर फॉस्फेट के यंत्र के साथ हुई ।
- **जहाजरानी उद्योगः-** 1941 में विशाखापट्टनम में पहला जहाजरानी उद्योग लगाया गया जिसका नाम हिन्दुस्तान शिपयार्ड था ।
- **सुती वस्त्र उद्योगः-** 1818 में कोलकता में प्रथम सुती वस्त्र मील की स्थापना की गई जो असफल रही । 1854 में मुंबई में प्रथम सफल सुती वस्त्र मील की स्थापना डाबर द्वारा की गई ।
- **जूट उद्योगः-** जूट उद्योग की स्थापना 1854 में रिशरा (कोलकाता) में की गई ।
- **ऊनी वस्त्र उद्योगः-** भारत में पहली ऊनी वस्त्र मील की स्थापना 1876 में कानपुर में की गई । वर्ष 1951-52 में GDP में औद्योगिक क्षेत्र का भाग 16.6 प्रतिशत था जो कि वर्ष 2016-17 में बढ़कर 29.02 प्रतिशत हो गया तथा वर्तमान में यह लगभग 31 प्रतिशत हैं ।

भारत के प्रमुख विनिर्माण उद्योग

लौह इस्पात उद्योगः-

- वर्ल्ड स्टील एसोसिएशन 2018 की रिपोर्ट के अनुसार लौह इस्पात उत्पादन में भारत चीन व अमेरिका के बाद तीसरे स्थान पर हैं ।
- 2003 के बाद से भारत स्पंज आयरन का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादन करता हैं ।
- फरवरी 2018 से भारत कच्चे इस्पात के उत्पादन में जापान को पीछे छोड़कर दूसरे पायदान पर आ गया हैं ।
- इस उद्योग में कच्चे माल के रूप में लौह अयस्क, मैंग्नीज, चूना पत्थर, कुकिंग कोयला एवं डोलामाइट का प्रयोग किया जाता हैं ।
- 1907 में साकची, झारखण्ड में जमशेदजी टाटा द्वारा लौह इस्पात उद्योग टाटा आयरन व स्टील कंपनी (TISCO) की स्थापना की गई । इसे भारत में आधुनिक लौह इस्पात की शुरूआत माना जाता हैं ।
- भारत में पहली बार 1874 में कुल्टी, पं.बंगाल में 'बंगाल आयरन वर्क्स' की स्थापना हुई, जो अब बंगाल लौहा व इस्पात उद्योग में बदल गया हैं ।
- 1907 में जमशेदपुर में TISCO भारत में स्थापित पहली नीजी क्षेत्र की लौह इस्पात उद्योग की इकाई बनी ।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में लगाए गए कारखाने -

- राउरकेला (ओड़िशा):- जर्मनी के सहयोग से स्थापित (1955 में स्थापना, 1959 से उत्पादन शुरू)
- भिलाई (छत्तीसगढ़):- रूस के सहयोग से स्थापित (1955 में स्थापना, 1959 से उत्पादन शुरू)

जूट उद्योगः-

- बंगाल में जूट उद्योग का केन्द्रीकरण हैं। बंगाल के 64 लाख से भी अधिक परिवार इससे जुड़े होने के कारण इसे गोल्डन फाइबर ऑफ बंगाल कहा जाता हैं।
- जूट का पहला कारखाना 1855 में जॉर्ज ऑकलैण्ड द्वारा रिशरा नामक स्थान पर लगाया गया।
- भारत के कुल जूट उत्पादन का 90 प्रतिशत अकेले प. बंगाल में होता हैं।
- जूट से निर्मित वस्तुओं के उत्पादन में भारत का विश्व में पहला तथा निर्यात में दूसरा स्थान हैं।
- (पहला स्थान बांग्लादेश का हैं)
- इसके निर्यात हेतु कोलकता बंदरगाह का प्रयोग किया जाता हैं।
- भारतीय जूट निगम 1971 में स्थापित किया गया।

कागज उद्योगः-

- कागज बनाने का पहला आधुनिक कारखाना सेरामपुर (पश्चिम बंगाल) में 1812 में स्थापित किया गया। लेकिन यह असफल रहा।
- 1881 में पं. बंगाल के टीटागढ से आधुनिक कागज उद्योग की शुरूआत की गई।
- 1 टन कागज के लिए लगभग 22 टन कच्चे माल की आवश्यकता होती हैं।
- इसके कच्चे माल में 70 प्रतिशत बाँस, 15 प्रतिशत सवाना घास, 7 प्रतिशत गन्ने की खोई, 5 प्रतिशत मुलायम लकड़ी, 3 प्रतिशत चावल, गेंहू आदि के पुआल, रद्दी कागज, कपड़े की मात्रा होती हैं
- पं. बंगाल कागज उद्योग का परम्परागम क्षेत्र हैं।
- नेपानगर (मध्यप्रदेश) अखबारी कागज के लिए जाना जाता हैं।
- महाराष्ट्र के बल्लारपुर में देश की सबसे बड़ी कागज मील हैं।
- मध्य प्रदेश के होशंगाबाद में नोटो के लिए कागज तैयार किया जाता हैं।

रेशम उद्योगः-

- चीन के बाद भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा रेशम उत्पादक देश हैं।
- देश में रेशम का आधुनिक कारखाना ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा 1832 में हावड़ा में प्रारम्भ किया गया। वर्तमान में देश में 324 रेशमी वस्त्रों के कारखाने हैं।
- भारत में 5 प्रकार के रेशम उत्पादित किए जाते हैं - मलबरी, ट्रॉपिकलटसर, ओकटसर, इरी और मूंगा।
- भारत के कुल कपड़ा निर्यात में रेशमी वस्त्रों का योगदान लगभग 3% हैं।
- केन्द्रीय सिल्क बोर्ड द्वारा। फरवरी 2019 को जारी रिपोर्ट के अनुसार कर्नाटक देश में सबसे ज्यादा कच्चे रेशम का उत्पादन करता हैं। इससे रेशमी धागा बनाया जाता हैं।
- बिहार तथा झारखण्ड टसर रेशम तथ असम मूंगा रेशम का वृहतम् उत्पादक राज्य हैं, जबकि मणिपुर एवं जम्मू कश्मीर में रेशम कीट पालन के लिए आदर्श जलवायु हैं।

एल्युमिनियम उद्योगः-

- भारत विश्व का 4.9% एल्युमिनियम उत्पादित कर चौथे स्थान पर हैं।
- भारत का पहला एल्युमिनियम संयंत्र 1937 में पं. बंगाल के जे.के. नगर (आसनसोल) में स्थापित किया गया।
- 1938 में झारखण्ड के मूरी नामक स्थान पर दुसरा तथा तीसरा उतरप्रदेश के रेणुकूट नामक स्थान पर हिन्दुस्तान एल्युमिनियम कार्पोरेशन (हिण्डाल्को) के रूप में लगाया गया।
- 27 नवंबर 1965 को सार्वजनिक क्षेत्र के पहले एल्युमिनियम उत्पादक उपक्रम के रूप में भारत एल्युमिनियम कंपनी लि. (बाल्को) की स्थापना की गई।
- 7 जनवरी 1981 को नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लि. (नाल्को) की स्थापना की गई। यह भारत की सबसे बड़ी एकीकृत एल्युमिनियम परियोजना कॉम्लेक्स हैं। 2008 में नाल्कों को नवरत्न का दर्जा दिया गया।

हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेडः-

- 9 नवंबर 1967 को इसकी स्थापना की गई। यह देश का एकमात्र शोधित तांबे का एकीकृत उत्पादक हैं। इसकी चार इकाईयाँ देश के विभिन्न राज्यों राजस्थान, झारखण्ड, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र में हैं। खेतड़ी कॉपर कॉम्पलेक्स (राजस्थान) इंडियन कॉपर कॉम्पलेक्स (घाटशिला, झारखण्ड) मलंजखंड कॉपर प्रोजेक्ट

अध्याय – 5

मौलिक अधिकार

मोलिक अधिकार (भाग -3)(art 12-35)

- समानता का अधिकार (Art- 14-18)
- स्वतंत्रता का अधिकार (Art 19-22)
- शोषण के विरुद्ध अधिकार (Art 23-24)
- धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (Art 25-28)
- सांस्कृतिक व शिक्षा का अधिकार (Art 29-30)
- संवैधानिक उपचारों का अधिकार (Art 32)
- अनुच्छेद 20 व 21 को छोड़कर बाकी अधिकार आपात काल में स्थापित हो जाते हैं।
- मौलिक अधिकारों की अवधारणा को U.S.A(अमेरिका) से अपनाया गया है।

समता का अधिकार :- (अनु. 14-18)

➢ **विधि के समक्ष समता (art -14)-**
विधी के समक्ष समता की अवधारणा ब्रिटेन से प्रभावित हैं । इसका अर्थ है कि सभी व्यक्तियों के लिए एकसमान कानून होगा तथा उन पर एकसमान लागु होगा ।

➢ **धर्म ,नस्ल ,जाति ,लिंग या जन्म-स्थान के आधार पर भेदभाव का प्रतिषेद(art -15)-**
राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूल, वेश, जाति, लिंग या जन्म स्थान को लेकर विभेद नही करेगा । यह व्यवस्था राज्य और व्यक्ति दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं ।

➢ **लोक नियोजन के सम्बन्ध में अवसर की समता (अनु०- 16)-** राज्य के अधीन किसी पद पर नियोजन या नियुक्ति से संबंधित विषयों में सभी नागरिकों के लिए अवसर की समानता होगी ।

➢ **अस्प्रश्यता का उन्मूलन (अनु.-17)-**
संविधान के अनु० 17 में यह प्रावधान है कि अस्पृश्यता को समाप्त किया जाता है और किसी भी रूप में अस्पृश्यता को बढ़ावा देना दण्डनीय अपराध होगा।

➢ **उपाधियों का अंत (अनु. 18)-** राज्य सेवा या विधा संबंधी सम्मान के सिवाय अन्य कोई भी उपाधि राज्य द्वारा प्रदान नहीं की जायेगी ।

➢ भारत का कोई नागरिक किसी अन्य देश से बिना राष्ट्रपति की आज्ञा के कोई उपाधि स्वीकार नहीं कर सकता है ।

स्वतन्त्रता का अधिकार(अनु० 19-22) :-

➢ **वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता(अनु. 19):-**
मूल संविधान में सात तरह की स्वतंत्रता का उल्लेख था । अब सिर्फ छह है ।

1.	art 19 (a)	बोलने की स्वतंत्रता /प्रेस की स्वतंत्रता
2.	art 19 (b)	शांतिपूर्वक बिना हथियारों के एकत्रित होने और सभा करने की स्वतंत्रता
3.	art 19 (c)	संघ बनाने की स्वतंत्रता
4.	art 19 (d)	देश के किसी भी क्षेत्र में आवागमन की स्वतंत्रता
5.	art 19 (e)	देश के किसी भी क्षेत्र में निवास करने और बसने की स्वतंत्रता
6.	art 19 (g)	कोई भी व्यापार एवं जीविका चलाने की स्वतंत्रता

➢ art 19 (f) सम्पति का अधिकार ,44 वाँ संविधान संशोधन 1978 के द्वारा हटा दिया गया।

अपराधो के सम्बन्ध में अथवा दोष सिद्धि के सम्बन्ध में संरक्षण(अनु. -20):-
इसमें प्रावधान हैं कि –

➢ किसी व्यक्ति को तब तक किसी अपराध के सम्बन्ध में दोषी नही ठहराया जायेगा जब तक उसने किसी प्रचलित विधि का उल्लंघन नही किया हो ।
➢ किसी व्यक्ति को वही दण्ड दिया जायेगा जो अपराध करते समय लागू। अर्थात बाद में बनाई गई विधी के अनुसार व्यक्ति को दण्डित नही किया जायेगा । लेकिन ये केवल आपराधिक मामलों पर ही लागू होता हैं। सिविल मामलो के संबंध में अपराध के बाद बनाई गई विधि के अनुसार व्यक्ति को दण्डित किया जा सकता।
➢ (कर चोरी, दिवालिया होना या किसी प्रकार के दिवानी से सम्बंधित प्रावधान)
➢ किसी व्यक्ति को एक अपराध के लिए एक बार ही दण्डित किया जायेगा।

➢ किसी अपराध के लिए किसी व्यक्ति की स्वयं के विरुद्ध साक्षी होने के बाध्य नही किया जाएगा।

<u>प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का सरंक्षण (अनु० 21) :-</u>

- इसमे प्रावधान है कि किसी व्यक्ति को उसके प्राण एवं देहिक स्वतंत्रता से विधी के द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार ही वंचित किया जाएगा।
- सर्वोच्च न्यायालय में अनु. 21 को समय-समय पर अधिक से अधिक प्रसारित किया। वर्तमान समय में इसमें निम्नलिखित अधिकार शामिल हो चुके है –

1. निजता का अधिकार।
2. स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार।
3. मानवीय प्रतिष्ठा के साथ जीने का अधिकार।
4. दुर्घटना के समय प्राथमिक उपचार का अधिकार ।
5. निः शुल्क कानूनी सहायता का अधिकार ।
6. हथकड़ी लगाने के विरुद्ध अधिकार ।
7. सूचना का अधिकार ।
8. कारावास में अकेले बंद करने के विरुद्ध अधिकार ।
9. देरी से फांसी के विरुद्ध अधिकार ।
10. फ़ोन टेपिंग के विरुद्ध अधिकार ।
11. विदेश यात्रा की अधिकार
12. नींद का अधिकार

<u>शिक्षा का अधिकार :- (अनु.21-क)</u>

86 वें संविधान संशोधन अधि. - 2002 के माध्यम से इसे संविधान में जोड़ा गया। इसमें प्रावधान है कि राज्य 6-14 आयु वर्ग के बालक को निशुल्क एवं अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध करवाएगा। इसके संबंध राज्य विधि बनाकर शिक्षा की व्यवस्था करेगा । इसी प्रावधान के तहत निःशुल्क एवं अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 पारित किया गया । जिसे 1 अप्रैल 2010 को लागू किया गया।

<u>अनु० 22 :- निरोध एवं गिरफ्तारी से संरक्षण</u> :-

इसके तहत व्यक्ति को निम्नलिखित अधिकार प्राप्त होते हैं –

- गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को उसकी गिरफ्तारी का कारण बताना होगा ।
- गिरफ्तार किये गए व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह अपनी पसंद के वकील से परामर्श ले सकता है।
- गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को 24 घंटे के भीतर न्यायिक अधिकारी (मजिस्ट्रेट) के सामने प्रस्तुत करना होगा। इन 24 घंटो में यात्रा का समय शामिल नही होगा। लेकिन यदि किसी व्यक्ति की गिरफ्तारी निवारक निरोध के तहत की जाती है तो उपर्युक्त अधिकार प्राप्त नहीं है। निवारक निरोध के तहत गिरफ्तार व्यक्ति तीन माह तक मजिस्ट्रेट सामने प्रस्तुत की आवश्यकता नहीं है।
- अनु.22 से सम्बंधित अधिकार किसी विदेशी को भी प्राप्त नही होते ।

मानव व्यापार एवं बलात् श्रम पर प्रतिबन्ध (अनु. 23)

➢ मानव दुर्व्यव्यापार से आशय है। महिला पुरुष बच्चो की वस्तुओं के समान खरीद अथवा बिक्री करना।
➢ इसमें देह व्यापार के लिए क्रय विक्रय अथवा शरीर के अंगो के क्रय विक्रय आदि को भी शामिल किया जाता है ।
➢ इसी प्रकार किसी व्यक्ति से बलात् श्रम नही करवाया जा सकता । बलात् श्रम से आशय है, व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध उससे कार्य करवाना।

बाल श्रम का प्रतिषेध (अनु. 24)

- 14 से 18 वर्ष की आयु के किसी बालक को कारखानों या अन्य किसी जोखिम वाले कार्य में नियोजित नहीं किया जा सकता।

➢ **<u>धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार (अनु. 25-28):-</u>**
➢ अंतः करण की और धर्म को मानने ,आचरण और प्रचार करने की स्वतंत्रता (अनु. 25)
➢ अनु. 25 में यह भी प्रावधान है कि कृपाण धारण करना और लेकर चलना सिख धर्म का मुख्य अंग माना जाएगा।

<u>धार्मिक कार्यो के प्रबंध की स्वतंत्रता(अनु० 26) :-</u>

व्यक्ति को अपने धर्म के लिए संस्थाओ की स्थापना व पोषण करने, विधि –सम्मत सम्पति के अर्जन, स्वामित्व व प्रशासन का अधिकार है ।

- अनु. 25 जहाँ व्यक्तिगत अधिकार से सम्बंधित हैं । जबकि अनु. 26 समूह से सम्बंधित है ।

<u>अनु. 27 – धर्म से सम्बंधित अथवा किसी धर्म विशेष की अभिवृद्धि के सम्बन्ध में करो के संदाय अथवा करो के देने की स्वतंत्रता</u>

अध्याय – 13

भारतीय संसद

संघीय विधानमंडल (संसद)

- भारतीय संविधान के अनु. 79 के अनुसार संसद के तीन अंग होते हैं - राष्ट्रपति, राज्यसभा और लोकसभा
- भारतीय संसद की संप्रभुता न्यायिक समीक्षा से प्रतिबंधित है।
- संसद में स्थगन प्रस्ताव (adjournment motion) लाने का उद्देश्य सार्वजनकि महत्व के अति आवश्यक मुद्दों पर बहस करना है।

संसद से सम्बंधित अनुच्छेद	
अनु.	सम्बंधित विषय – वस्तु
79	संसद का गठन
80	राज्य सभा की सरंचना
81	लोक सभा की सरंचना
82	प्रत्येक जनगणना के पश्चात पुनः समायोजन
83	संसद के सदनों की अवधि
84	संसद की सदस्यता के लिए अर्हता
85	संसद के सत्र सत्रावसान एवं विघटन
86	राष्ट्रपति का सदनों को सम्बोधित तथा उनको संदेश देने का अधिकार
87	राष्ट्रपति का विशेष सम्बोधन अभिभासण
88	सदनों के सम्बंध में मंत्रियों और महान्यायवादी के अधिकार
89	राज्य सभा का सभापति तथा उपसभापति
90	राज्य सभा के उपसभापति के पद की रिक्ति, त्याग तथा पद से हटाया जाना।
91	सभापति के कर्तव्यों के निर्वहन अथवा सभापति के रूप में कार्य करने की उपसभापति अथवा अन्य व्यक्ति की शक्ति
92	जब राज्य सभा के सभापति अथवा उपसभापति को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना
93	लोक सभा का अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष
94	लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष पद की रिक्ति, त्यागपत्र तथा पद से हटाया जाना
95	लोक सभा उपाध्यक्ष अथवा किसी अन्य व्यक्ति का लोक सभा अध्यक्ष के कर्तव्यों के निर्वहन की शक्ति
96	जब लोक सभा अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष को पद से हटाने का संकल्प विचाराधीन हो तब उसका पीठासीन न होना।
97	सभापति व उपसभापति तथा अध्यक्ष व उपाध्यक्ष के वेतन-भत्ते
98	संसद का सचिवालय
99	सदस्यों द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान
100	दोनों सदनों में मतदान, रिक्तयों के होते हुए भी सदनों की कार्य करने की शक्ति तथा गणपूर्ति
101	स्थानों का रिक्त होना
102	संसद की सदस्यता के लिए निरर्हताएं
103	सदस्यों की अयोग्यता से सम्बंधित प्रश्नों पर निर्णय
104	अनु. 99 के अंतर्गत शपथ लेने या प्रतिज्ञान करने से पहले अर्हत न होते अथवा निरर्हत किए जाने पर भी सदन में बैठने तथा मतदान करने पर दंड।

लोकसभा (art-81)

- लोकसभा को निम्न सदन / प्रथम सदन / अस्थाई सदन / लोकप्रिय सदन कहते हैं।
- प्रथम लोकसभा का गठन 17 अप्रैल, 1952 को हुआ था।
- अनच्छेद 81 तथा 331 लोकसभा के गठन से संबंधित है।
- लोकसभा में अधिकतम 552 सदस्य हो सकते हैं। इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि केंद्र शासित प्रदेशों से 20 सदस्य चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।
- लोकसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 545 से इनमें से 530 सदस्य राज्यों से जबकि 13 सदस्य केंद्र शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं जबकि 2 आंग्ल

भारतीय सदस्य भारत के राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जाते हैं।

- 91वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2001 में प्रावधान किया गया है कि लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 552 सन् 2026 तक बनी रहेगी।
- लोकसभा का कार्यकाल अपनी प्रथम बैठक से अगले 5 वर्ष तक होती है।

- **लोकसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति में निम्नलिखित योग्यताएं होनी आवश्यक हैं:**
  - वह भारत का नागरिक हो ।
  - उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो ।
  - वह संघ सरकार तथा राज्य सरकार के अधीन किसी लाभ के पद पर न हो (सरकारी नौकरी में न हो)
  - वह पागल / दिवालिया न हो ।
- लोकसभा - अध्यक्ष का कार्यकाल पाँच वर्ष होता है,
- किन्तु अपने पद से वह स्वेच्छा से त्यागपत्र दे सकता है अथवा अविश्वास प्रस्ताव द्वारा उसे हटाया जा सकता है।
- 61वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1989 के द्वारा यह व्यवस्था कर दी गई कि 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाला नागरिक लोकसभा या राज्य विधानसभा के सदस्यों को चुनने के लिए वयस्क माना जाएगा।
- लोकसभा विघटन की स्थिति में 6 मास से अधिक नहीं रह सकती।
- लोकसभा का गठन अपने प्रथम अधिवेशन की तिथि से पाँच वर्ष के लिए होता है।
- लेकिन प्रधानमंत्री की सलाह पर लोकसभा का विघटन राष्ट्रपति द्वारा 5 वर्ष के पहले भी किया जा सकता है।
- क्योंकि लोकसभा के दो बैठकों के बीच का समयान्तराल 6 मास से अधिक नहीं होना चाहिए।
- लोकसभा की अवधि एक बार में 1 वर्ष से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकती है।
- आपात उद्घोषणा की समाप्ति के बाद 6 माह के अन्दर लोकसभा का सामान्य चुनाव कराकर उसका गठन आवश्यक है।
- लोकसभा का अधिवेशन 1 वर्ष में कम से कम 2 बार होना चाहिए
- अनुच्छेद 85 के तहत राष्ट्रपति को समय-समय पर संसद के प्रत्येक सदन, राज्यसभा एवं लोकसभा को आहुत करने, उनका सत्रावसान करने तथा लोकसभा का विघटन करने का अधिकार प्राप्त है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है -
- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।
- लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।
- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा के सामान्य सदस्य के रूप में शपथ लेता है।
- लोकसभा अध्यक्ष को कार्यकारी अध्यक्ष शपथ ग्रहण कराता है।
- आगामी लोकसभा चुनाव के गठन के बाद उसके प्रथम अधिवेशन की प्रथम बैठक तक अपने पद पर बना रहता है। लोकसभाध्यक्ष उपाध्यक्ष को अपना त्यागपत्र दे देता है।

राज्यों में लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. उत्तर प्रदेश	80
2. महाराष्ट्र	48
3. पश्चिम बंगाल	42
4. बिहार	40
5. तमिलनाडु	39
6. मध्य प्रदेश	29
7. कर्नाटक	28
8. गुजरात	26
9. राजस्थान	25
10. आंध्र प्रदेश	25
11. ओडिशा	21
12.केरल	20
13. तेलंगाना	17
14. असम	14
15. झारखण्ड	14
16. पंजाब	13
17. छत्तीसगढ़	11
18. हरियाणा	10
19. जम्मू / कश्मीर	6
20. उत्तराखण्ड	5
21. हिमाचल प्रदेश	4

22.आंध्रप्रदेश	2
23. गोवा	2
24. मणिपुर	2
25. मेघालय	2
26. त्रिपुरा	2
27. मिजोरम	1
28. नागालैंड	1
29. सिक्किम	1

केन्द्रशासित प्रदेश लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. दिल्ली	7
2. अंडमान निकोबार	1
3.चण्डीगढ़	1
4. दादरा / नागर हवेली	1
5. दमन एवं दीव	1
6. लक्षद्वीप	1
7. पुदुचेरी	1

राज्यसभा (art-80)

- राज्यसभा को उच्च सदन /द्वितीय सदन /स्थायी सदन / संघीय सदन भी कहा जाता है ।
- राज्यसभा राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है ।
- यह एक स्थाई सदन है और कभी भंग नहीं होता
- किन्तु इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष के बाद स्थान खाली कर देते हैं, जिनकी पूर्ति नए सदस्यों से होती है।
- भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है।
- राज्यसभा में अधिक-से-अधिक 250 सदस्य हो सकते हैं। इनमें 238 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों से निर्वाचित और 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत होते हैं। ये 12 सदस्य ऐसे होते हैं जिन्हें साहित्य, विज्ञान, कला सामजिक सेवा इत्यादि का विशेष ज्ञान होता है।
- राज्यसभा की वर्तमान सदस्य संख्या 245 में , राज्यों से 233 तथा राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत 12 सदस्य होते हैं।
- **राज्यों के प्रतिनिधि** - सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रीति से होता है। राज्यों के प्रतिनिधि अपने राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा निर्वाचित होते हैं। यह निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्दति से तथा एकल संक्रमणीय मत विधि के अनुसार होता है।
- भारत में राज्यसभा के गठन के विषय में एक ओर दक्षिण अफ्रीका की अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली और दूसरी ओर आयरलैंड की मनोनयन प्रणाली को अपनाया गया है। राज्यसभा में प्रतिनिधियों की संख्या उस राज्य की जनसंख्या के आधार पर निश्चित की गई है।

- **राज्यसभा की सदस्यता के लिए योग्यताएँ**
  - उसे भारत का नागरिक होना चाहिए
  - उसकी आयु 30 वर्ष से कम न हो
  - भारत सरकार या राज्य सरकार के अंतर्गत लाभ का पद न ग्रहण करे
  - पागल या दिवालिया न हो

- **राज्यसभा के अधिकार और कार्य**
- धन तथा वित्त विधेयक राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से सदन में जाते हैं।
- धन विधेयक राज्यसभा में केवल 14 दिन के लिए भेजा जाता है यदि राज्यसभा द्वारा इसे 14 दिन में पारित न किया जाए तो इसे स्वतः पारित मान लिया जाता है।
- वित्त विधेयक राज्यसभा में भेजा ही नहीं जाता है।
- यदि किसी विधेयक पर दोनों सदनों में मतभेद हो, तो राष्ट्रपति दोनों सदनों का संयुक्त अधिवेशन बुला सकता है। संयुक्त बैठक में दोनों सदनों के सदस्यों के बहुमत से जो भी निर्णय हो जाए, वही अंतिम निर्णय समझा जायेगा
- राष्ट्रपति के निर्वाचन में राज्यसभा के निर्वाचित सदस्य भाग लेते हैं ।
- राज्यसभा के सदस्य भी मंत्री नियुक्त हो सकते हैं ।
- आपातकालीन उद्घोषणा का अनुमोदन लोक सभा के साथ-ही-साथ राज्यसभा द्वारा भी होना आवश्यक है।
- राष्ट्रपति / उच्चतम तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश के विरुद्ध महाभियोग (Impeachment) लगाने का अधिकार लोक सभा के सामान राज्य सभा को भी है।

- सत्र के 40 दिन पूर्व या 40 दिन पश्चात् दीवानी मसलो पर सांसदों पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता ।
- सत्र के दौरान आपराधिक मसलो में भी स्पीकर की अनुमति के बगैर सांसदों को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता ।
- **कोरम** – किसी भी सदन की बैठक उस स्थिति में संचालित अनु. 100 (iii) की जा सकती हैं, जब सदन की कुल संदस्य संख्या का 10% उपस्थित हों। यही कोरम है ।
- प्रत्येक सदन में सबसे बड़े विपक्षी दल को जिसे कम से कम 10% सीटे प्राप्त हों, विपक्ष का नेता घोषित किया जाता हैं ।
- 1977 से विपक्ष के नेता को कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया गया था ।
- 1966 में सर्वप्रथम संगठन कांग्रेस के राम सुमद्र सिंह को विपक्ष का नेता घोषित किया था।
- 1977 में लोकसभा में y-B-Chavan तथा राज्यसभा में कमलापति त्रिपाठी को विपक्ष का नेता घोषित किया गया।
- संचेतक का मुख्य कार्य अपने दल में अनुशासन बनाएं रखना है। दल-बदल विरोधी कानून उसी निर्देशो पर आधारित होती हैं।
- संसद के दो सत्रों के बीच अधिकतम 6 माह का अवकाश हो सकता हैं।
- संसद की वर्ष में 90 दिन बैठक होनी चाहिए ।
- संसद का मुख्य कार्य कानून का निर्माण करना है। संसद की कार्यवाही को 3 भागों में बाटा जा सकता हैं।
  (1) प्रश्नकाल – (11-12 बजे)
  (2) शून्यकाल (12-1 बजे)
  (3) मुख्य कार्यवाही (2-6 बजे)
- संसद की कार्यवाही का प्रथम घंटा प्रश्नकाल(question hour) कहलाता हैं ।
- संसदीय व्यवस्था में शून्य काल (zero hour) भारत की देन हैं ।
- लोकसभा में शून्य काल की अवधि अधिक से अधिक एक घंटे की होती हैं ।
- यदि कोई विधेयक लोकसभा द्वारा पारित हैं, परन्तु राज्यसभा में विचारधीन हैं, तथा राज्यसभा भंग हो गयी हों, तो विधेयक व्यपगत (समाप्त) हो जाता हैं।
- यदि बिल राज्य सभा में विचारधीन हो, राज्यसभा द्वारा पारित होकर लोकसभा में विचारधीन हो तथा लोकसभा भंग हो जाती हैं। तो विधेयक व्यपगत नहीं होता।
- यदि विधेयक राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के लिए भेज दिया गया हैं, तथा इन दोनों सदनों द्वारा पारित किया जा चुका हैं, तथा लोकसभा भंग हो जाती हैं। तो विधेयक व्यपगत नहीं होता।
- यदि विधेयक दोनों सदनों में मतभेद हों, परन्तु संयुक्त बैठक बुला ली गयी हो तो विधेयक व्यपगत नहीं होता, भले ही लोकसभा भंग हो जाए ।

संसद में प्रस्तुत होने वाले प्रमुख प्रस्ताव

- अनुच्छेद 75 (iii) के अनुसार विश्वास-मत का जन्म हुआ। इस अनुच्छेद के अनुसार मंत्रिपरिषद सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होते हैं।
- विश्वास प्रस्ताव प्रधानमंत्री के द्वारा लोकसभा में रखा जाता हैं।
- अब तक 3 प्रधानमंत्री विश्वास मत हासिल न करने के आधार पर अपदस्थ हो चुके हैं।
  - V-P Singh (1990)
  - HD देवगौड़ा (1997)
  - अटल बिहारी बाजपेयी (1997)
- सर्वप्रथम चरण सिंह (1979) को विश्वास मत साबित करने को कहा गया।
- इसके पूर्व राष्ट्रपति को अभिभाषण प्रस्ताव को ही विश्वास मत मान लिया जाता हैं।
- अविश्वास प्रस्ताव - "भारतीय संविधान के अनुच्छेद 75 (iii) के आधार पर इसका जन्म हुआ । यह विपक्ष (विरोधी पार्टी) द्वारा लोकसभा में प्रस्तुत किया जाता हैं।
- विपक्ष, इसके लिए कुल सदस्यो का कम से कम 10% प्रस्ताव रखते हैं ।
- अविश्वास प्रस्ताव 19 दिन के नोटिस पर ही प्रस्तुत किया जा सकता हैं ।
- 1963 में पहला अविश्वास प्रस्ताव JB-कृपलानी द्वारा रखा गया था ।
- अब तक कोई भी अविश्वास प्रस्ताव लोकसभा द्वारा पारित नहीं किया जा सका ।
- विश्वास व अविश्वास प्रस्ताव के मध्य कम से कम 6 माह का अन्तर जरूर होना चाहिए।

- जोखिम पूंजी (वेंचर कैपिटल) एवं व्यक्तिगत इक्विटी (प्राइवेट इक्विटी) ने विगत वर्ष सर्वाधिक वृहद से एक स्टार्ट-अप एवं विकास पारिस्थितिकी (ग्रोथ इकोसिस्टम) को सुविधाजनक बनाने के लिए 5 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया। इस निवेश में वृद्धि करने में सहायता करने हेतु उपाय किए जाने चाहिए।
- नवोदित एवं विकासशील क्षेत्रों के लिए संमिश्रित निधि को प्रोत्साहित किया जाएगा।
- हरित आधारिक अवसंरचना के लिए संसाधनों की अभिनियोजन हेतु सार्वभौम हरित ऋण पत्र (सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड) जारी किए जाएंगे।

डिजिटल रुपया

- केंद्रीय बजट 2022-23 में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 2022-23 से डिजिटल रुपए को प्रारंभ करने का प्रावधान करता है।

राज्यों को अधिक राजकोषीय स्थान प्रदान करना

- 'पूंजीगत निवेश के लिए राज्यों को वित्तीय सहायता योजना' के लिए परिवर्धित परिव्यय:
- बजट अनुमान में 10,000 करोड़ रुपये से चालू वर्ष के संशोधित अनुमानों में 15,000 करोड़ रुपये
- अर्थव्यवस्था में समग्र निवेश को उत्प्रेरित करने में राज्यों की सहायता के लिए 2022-23 में 1 लाख करोड़ रुपये का आवंटन: सामान्य उधार के अतिरिक्त पचास वर्षीय ब्याज मुक्त ऋण
- 2022-23 में, राज्यों को जीएसडीपी के 4% के राजकोषीय घाटे की अनुमति प्रदान की जाएगी, जिसमें से 5%ऊर्जा क्षेत्र के सुधारों से जुड़े होंगे

अध्याय - 3

बैंकिंग

- बैंक उस वित्तीय संस्था को कहते हैं जो जनता की धनराशि जमा करने तथा जनता को ऋण देने का काम करती है।
- लोग अपनी बचत राशि को सुरक्षा की दृष्टि से अथवा ब्याज कमाने हेतु इन संस्थाओं में जमा करते हैं और आवश्यकता अनुसार समय-समय पर निकालते रहते हैं।
- बैंक इस प्रकार जमा से प्राप्त राशि को व्यापारियों एवं व्यवसायियों को ऋण देकर ब्याज कमाते हैं।

भारत में बैंकिंग

- भारत में स्थापित पहली बैंक Bank of Hindustan थी इसकी स्थापना Alexandey and Company 1770ई. में की थी कुछ समय बाद यह बैंक बन्द हो गई।
- इसके बाद देश में निजी और सरकारी अंशधारियों द्वारा तीन प्रेसीडेन्सी बैंकों की स्थापना की गई - वर्ष 1806 में बैंक ऑफ बंगाल (Bank of Bengal.) , वर्ष 1840 में बैंक ऑफ बॉम्बे (Bank of Bombay) तथा वर्ष 1843 में बैंक ऑफ मद्रास (Bank of Madras) ।
- इन तीनों बैंकों पर बैंक ऑफ मद्रास अपना नियंत्रण रखती थी । बाद में इन बैंकों के कार्यों को सीमित कर दिया गया । वर्ष 1921 में इन तीनों बैंकों को मिलाकर इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया (Imperial Bank of India) की स्थापना की गई और 1 जुलाई, 1955 को राष्ट्रीयकरण के उपरान्त इसका नाम बदलकर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया रख दिया गया ।
- भारत में पहली सीमित देयता वाला भारतीय बैंक अवध कमर्शियल बैंक था जिसकी स्थापना फैजाबाद में वर्ष 1881 में की गयी थी ।
- उसके बाद वर्ष 1894 में लाहौर में पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना हुई जो पहला पूर्ण रूप से प्रथम भारतीय बैंक था ।

भारत में स्थापित प्रमुख बैंक व उनकी स्थापना

बैंक का नाम	स्थापना वर्ष
द बैंक ऑफ हिन्दुस्तान	1770
बैंक ऑफ बंगाल	1806
बैंक ऑफ बॉम्बे	1840
बैंक ऑफ मुद्रास	1843
इलाहाबाद बैंक	1865
एलाइन्स बैंक ऑफ शिमला	1881
अवध कॉमर्शियल बैंक	1881
पंजाब नेशन बैंक	1894
बैंक ऑफ इंडिया	1906
पंजाब एंड सिंध बैंक	1908
बैंक ऑफ बडौदा	1909
सेण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	1911
बैंक ऑफ मैसूर	1913
इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया	1921
भारतीय रिजर्व बैंक	1935
भारतीय स्टेट बैंक	1955

भारतीय रिजर्व बैंक

- भारत का केन्द्रीय बैंक है ।
- वर्ष 1930 में केन्द्रीय बैंकिंग जाँच समिति की सिफारिश के आधार पर भारत के केन्द्रीय बैंक के रूप में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (R.B.I.) की स्थापना RBI अधिनियम, 1934 के तहत् । अप्रैल , 1935 को 5 करोड़ रुपये की अधिकृत पूँजी से हुई थी ।
- 1 जनवरी, 1949 को भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया । इसके प्रथम गवर्नर सर ओसबोर्न स्मिथ (1935-37) थे ।
- देश के स्वतंत्रता के समय में RBI के गर्वनर सर सी डी . देशमुख (1943-49) थे ।
- रिजर्व बैंक के कार्यों का संचालन केन्द्रीय संचालक मण्डल (Central Borad of Directors) द्वारा होता है ।
- सम्पूर्ण देश में इसे चार भागों में बाँटा गया है - उत्तरी क्षेत्र , दक्षिणी क्षेत्र , पूर्वी क्षेत्र तथा पश्चिमी क्षेत्र ।
- इसमें प्रत्येक के लिए 5 सदस्यों का एक स्थानीय बोर्ड (Local board) होता है ।
- केन्द्रीय बोर्ड में 1 गवर्नर तथा अधिक से अधिक 4 डिप्टी गवर्नर होते हैं , जिनकी नियुक्ति केन्द्र सरकार पाँच वर्षों के लिए करती है ।
- वर्तमान में RBI के 25वें गवर्नर शक्तिकांत दास (12 दिसम्बर, 2018 से लगातार)हैं।
- स्थानीय बोर्डों के कार्यालय नई दिल्ली , चेन्नई , कोलकाता और मुम्बई में हैं ।
- स्थानीय बोर्ड केन्द्रीय बोर्ड के आदेशानुसार कार्य करते हैं ।
- रिजर्व बैंक का प्रधान अथवा केन्द्रीय कार्यालय मुम्बई में स्थित है ।
- नई दिल्ली , कोलकाता तथा चेन्नई में स्थानीय प्रधान कार्यालय हैं

RBI के कार्य

भारत में नए नोट जारी करने की व्यवस्था

- एक रुपये के नोट का सभी सिक्कों को छोड़कर रिजर्व बैंक को विभिन्न मूल्य वर्ग के नोटों को जारी करने का एकाधिकारक प्राप्त है ।
- रिजर्व बैंक सरकार के प्रतिनिधि के रूप में एक रुपए के नोटों तथा सिक्कों एवं छोटे सिक्कों का देशे में वितरण का कार्य करता है ।
- करेन्सी नोट जारी करने के लिए वर्तमान में रिजर्व बैंक नोट प्रचालन की न्यूनतम निधि पद्धति (Minimum Reserve System) को अपनाता है । इस पद्धति के अंतर्गत रिजर्व बैंक के पास स्वर्ण एवं विदेशी ऋणपत्र कुल मिलाकर किसी भी समय 200 करोड़ रुपये के मूल्य से कम नहीं होने चाहिए । इनमें स्वर्ण का मूल्य (धातु तथा मुद्रा मिलाकर) 115 करोड़ रुपए से कम नहीं होना चाहिए । यह पद्धति रिजर्व बैंक ने 1957 के बाद अपनाई थी ।

NOTE-नए नोट छापने की एक अन्य व्यवस्था भी हैं परन्तु इसका प्रयोग भारत में नहीं होता यह व्यवस्था अनुपाती आरसी व्यवस्था हैं (Prahetional Resere system) इसके अन्तर्गत जिस अनुपात में नए नोट का मूल्य बढ़ता हैं उसी अनुपात में रखे गए कोष को बढाना पड़ता हैं
NOTE – 1000 रुपये के नोटों का परिचालन 8 नवम्बर, 2016 से बंद हो गया हैं।

NOTE- सिक्के सीमित विधि ग्राह्य (Limited Legal Tender) हैं। भारत में कागजी नोट असीमित विधि ग्राह्य (Unlimited Le gal Tender) हैं। इसका अर्थ यह हैं कि भुगतान का निपटारा करने के लिए सिक्कों का प्रयोग केवल एक सीमा तक ही किया जा सकता हैं। इसके विपरीत , कागजी नोटों के रूप में भुगतानों का निपटारा करने हेतु उनका प्रयोग असीमित मात्रा में किया जा सकता हैं।

सिक्कों का उत्पादन

- सिक्कों का उत्पादन करने तथा सोने और चाँदी की परख करने एवं तमगों का उत्पादन करने के लिए भारत सरकार की पाँच टकसालें मुम्बई , अलीपुर (कोलकाता) , सैफाबाद (हैदराबाद) , चेलपिल्ली (हैराबाद) तथा नोएडा में स्थित हैं।
- टकसालों में सिक्कों के अलावा विभिन्न प्रकार के पदकों (मेडल) का भी उत्पादन किया जाता हैं।
- **NOTE**- 25 पैसे तथा इससे कम मूल्य के सभी सिक्कों का परिचालन जुलाई, 2011 से बंद हो गया हैं। अर्थात देश में अब 50 पैसे का सिक्का सबसे कम मूल्य की विधिग्राह्य मुद्रा हैं।

1. इण्डिया सिक्योरिटी प्रेस , नासिक (महाराष्ट्र) –

- भारत प्रतिभूति में डाक सम्बन्धी लेखन सामग्री , डाक एवं डाक - भिन्न टिकटों , अदालती एवं गैर - अदालती स्टाम्पों , बैंकों (RBI तथा SBI) के चेकों , बॉण्डों , राष्ट्रीय बचत पत्रों आदि के अलावा राज्य सरकारों , सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों , वित्तीय निगमों आदि के प्रतिभूति पत्रों की छपाई की जाती हैं।

2. सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस , हैदराबाद

- सिक्योरिटी प्रिन्टिंग प्रेस हैदराबाद की स्थापना दक्षिण राज्यों की डाक लेखन सामग्री की मांगों को पूरा करने के लिए की गई तथा यहाँ पूरे देश की केन्द्रीय उत्पाद शुल्क स्टाम्प की छपाई भी होती हैं।

3. करेन्सी नोट प्रेस , नासिक (महाराष्ट्र)

- नोट प्रेस 1 , 2 , 5 , 10 , 50 , 100 , 500 तथा 2000 रुपये के बैंक नोट छापती हैं और उनकी पूर्ति करती हैं।

4. बैंक नोट प्रेस , देवास (मध्य प्रदेश)

- देवास स्थित बैंक नोट प्रेस 20 , 50 , 100 , 500 और 2000 रुपये के उच्च मूल्य वर्ग के नोट छापती हैं।
- बैंक नोट प्रेस का स्याही का कारखाना प्रतिभूति पत्रों की स्याही का निर्माण करता हैं।

5. साल्बोनी (पं . बंगाल) तथा मैसूर (कर्नाटक) के भारतीय रिजर्व बैंक ने दो नयी एवं अत्याधुनिक करेन्सी नोट प्रेस स्थापित की गयी हैं। यहाँ भारतीय रिजर्व बैंक के नियन्त्रण में करेन्सी नोट छापे जाते हैं।

6. सिक्योरिटी पेपर मिल , होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

बैंक और करेन्सी नोट कागज तथा गैर - ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर की छपाई में प्रयोग होने वाले कागज का उत्पादन करने के लिए सिक्योरिटी पेपर मिल होशंगाबाद में 1967-68 में चालू की गई थी।

<u>सरकार के बैंकर का कार्य करना</u>

- सरकारी बैंकर के रूप में यह निम्नलिखित कार्य सम्पन्न करता हैं-

(i) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से धन प्राप्त करना और इनके आदेशानुसार इनका भुगतान करना।

(ii) भारत सरकार तथा राज्य सरकारों की ओर से जनता से ऋण प्राप्त करना।

(iii) सरकारी कोषों का स्थानान्तरण करना।

(iv) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के लिए विदेशी विनिमय का प्रबन्ध करना।

(v) भारत सरकार एवं राज्य सरकारों को आर्थिक सलाह देना।

	की कुल वैधानिक जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत के बराबर उनके मूल कोटे निर्धारित कर दिया गया । • निर्धारित कोटे की सीमा तक रिजर्व बैंक से बैंक दर पर ऋण लिया जा सकता है । इससे अधिक ऋण देने पर बैंक दर के अतिरिक्त ब्याज की दंड दर (Penal rate) देनी पड़ती है । • बैंक दर में वृद्धि या कमी व्यावसायिक बैंक द्वारा आवंटित ऋणों पर ब्याद दर कम या ज्यादा करने के लिए होता है । • **NOTE :** बेस रेट वह दर है जिसके नीचे अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक किसी भी तरह का ऋण नहीं दे सकते हैं । यह वर्ष 2010 में पूर्व प्रचलित प्राइम लैंडिंग रेट नोट (PLR) के स्थान पर अपनाया गया है
नकद आरक्षण अनुपात (Cash Reserve Ratio)	• प्रत्येक व्यापारिक बैंक अपनी कुछ जमाओं का एक निर्धारित प्रतिशत रिजर्व बैंक के पास सदैव नकद रूप में रखता है जिसे नकद आरक्षण अनुपात (CRR) कहते हैं । • रिजर्व बैंक इस नकद पर कोई ब्याज बैंक को नहीं देता है । जब रिजर्व बैंक साख मुद्रा वृद्धि करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में कमी कर देता है । और यदि वह साख मुद्रा में कमी करना चाहता है , तो वह इस अनुपात में वृद्धि कर देता है ।
वैधानिक तरलता अनुपात (Statutory Liquidity Ratio)	• प्रत्येक बैंक को कुल जमाराशि के एक निश्चित प्रतिशत को अपने पास नकद रूप में या अन्य तरल परिसम्पत्तियों के रूप में (सोना अनुमोदित प्रतिभूतियाँ- सरकारी प्रतिभूतियाँ) रखना पड़ता है जिसे वैधानिक तरलता (SLR) कहा जाता है । • यदि रिजर्व बैंक को साख मुद्रा का प्रसार करना होता है , तो इस अनुपात को कम कर दिया जाता है , ताकि बैंकों के पास तरल कोषों में वृद्धि हो सके । • यदि साख का संकुचन करना होता है , तो इस अनुपात को बढ़ा दिया जाता है , ताकि बैंकों के पास तरल कोष कम उपलब्ध हो ।
रेपो दर (Repo Rate)	• रेपो दर वह दर है जिस पर रिजर्व बैंक बैंकों को अल्पकालीन ऋण देकर अर्थव्यवस्था में तरलता की अतिरिक्त मात्रा जारी करता है । • इसका प्रभाव व्यावसायिक बैंकों द्वारा आवंटित ऋणों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है । • इसका प्रयोग तात्कालिक मुद्रा के प्रसार में वृद्धि या कमी के लिए किया जाता है ।

	• मंदी के दौरान रेपो दर में कटौती की जाती है ताकि मुद्रा के प्रसार में वृद्धि हो । ज्यों - ज्यों मंदी का दौर खत्म होता है , रेपो दर से वृद्धि की जाती है ताकि तात्कालिक मुद्रा का प्रसार कम हो ।
रिवर्स रेपो दर (Reverse Repo Rate)	• यह रेपो दर से उल्टी होती है । बैंकों के पास दिनभर के कामकाज के बाद बहुत बार एक बड़ी रकम शेष बच जाती है । बैंक वह रकम अपने पास रखने के बजाए रिजर्व बैंक में रख सकते हैं , जिस पर उन्हें रिजर्व बैंक से ब्याज भी मिलता है । जिस दर पर यह ब्याज मिलता उसे रिवर्स रेपो दर कहते हैं ।
मार्जिनल स्टैण्डिंग फैसिलिटी (MSF)	• इसके अंतर्गत व्यापारिक बैंक । दिन (24 घण्टे) हेतु ऋण प्राप्त कर सकते हैं । • MSF के माध्यम से बैंक अपनी NDTL के 2.5% तक ऋण प्राप्त कर सकते हैं । • इसमें SLR में रखी प्रतिभूतियों को भी गिरवी रख सकते हैं । • यह सुविधा मात्र वाणिज्यक बैंकों को उपलब्ध है । MSF की ब्याज दर Repo rate से 0.25 % अधिक होती

NOTE- खुले बाजार की क्रियाएँ (Open Market Opera tions)

- खुले बाजार की क्रियाओं से आशय केन्द्रीय बैंक द्वारा बाजार में प्रतिभूतियों, ऋण - पत्रों तथा बिलों के क्रय विक्रय से है । केंद्रीय बैंक द्वारा प्रतिभूतियों को बेचने से बाजार में मुद्रा की मात्रा कम हो जाती है , जिससे साख का सन्तुलन होता है और प्रतिभूतियों के खरीदे जाने से बाजार में मुद्रा की मात्रा बढ़ती है तथा साख का विस्तार हो जाता है ।
- तरलता की दृष्टि से प्रतिभूतियों एवं ऋणों का अनुक्रम है – नकद, एडहॉक ट्रेजरी बिल्स (इन्हें बंद किया जा चुका है), ट्रेजरी बिल्स तथा कॉल मनी।

ऋणदर का सीमांत लागत (MCLR)

- यह अप्रैल, 2016 में प्रभावी हुआ ।
- यह फ्लोटिंग - रेट ऋणों के लिये एक बेंचमार्क ऋण दर है ।
- यह न्यूनतम ब्याज दर है जिस पर वाणिज्यिक बैंक ग्राहकों को उधार दे सकते हैं ।
- यह दर चार घटकों- धन की सीमांत लागत, नकद आरक्षित अनुषात, परिचालन लागत और परिपक्वता अवधि पर आधारित है ।
- MCLR वास्तविक जमा दरों से जुड़ा हुआ है । इसलिए जब जमा दरों में वृद्धि होती है तो यह इंगित करता है कि बैंकों की ब्याज दर बढ़ने की संभावना है ।
- इसका उद्देश्य RBI द्वारा किए गए परिवर्तन का लाभ बैंकों द्वारा उपभोक्ताओं तक पहुँचाना है ।

(B) गुणात्मक विधियाँ

- इन विधियों द्वारा साख के प्रवाह को आर्थिक क्रिया के निर्दिष्ट या विशेष क्षेत्र की ओर मोड़ते या सीमित करते हैं ।
- गुणात्मक विधियों कुछ सीमा तक परिमाणात्मक विधियों का भी अश रहता है ।
- ये विधियाँ निम्न है –

I. सीमांत आवश्यकता (Margin Requirement) :

सीमांत आवश्यकता से अभिप्राय बैंक द्वारा किसी वस्तु की जमानत पर दिए गए ऋण तथा जमानत वाली वस्तु के वर्तमान मूल्य के अंतर से है । जैसे- मान लीजिए किसी व्यक्ति ने100रु. मूल्य का माल बैंक के पास जमानत के रूप में रखा है और बैंक उसे 80रु. का ऋण देता है । इस स्थिति में सीमांत आवश्यकता 20% होगी । यदि अर्थव्यवस्था की किसी विशेष व्यावसायिक क्रिया के लिए साख के प्रवाह को सीमित करना है तो उस क्रिया के लिए सीमांत आवश्यकता को बढ़ा दिया जाएगा । इसके विपरीत यदि साख का

ढाँचे को मज़बूत करने हेतु अलग-अलग प्रावधान किये गए।

- छठी और सातवीं पंचवर्षीय योजना ने देश के सहकारी ढाँचे के विस्तार और विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

➢ सहकारी बैंकों की स्थापना आपसी सहयोग के आधार पर की जाती हैं यह बैंक बिना लाभ बिना घाटे के कार्य करने का प्रयास करती हैं

➢ सहकारी बैंक को दो श्रेणी में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. State Co-operative Bank
2. Urban Co-operative Bank

➢ State Co-oeperative Bank का पंजीयन State Co-operative societies Act के अन्तर्गत होता है जबकि cran Co-operative Bank का पंजीयन Multi State Co-operative societies Act के अन्तर्गत होता है।

➢ सहकारी बैंकों पर दोहरा नियंत्रण होता है इनका प्रबंधन राज्य सरकारों के अधीन होता है जबकि बैंकिंक सेवाओं का संचालन RBI के दिशा निर्देशों के आधार पर होता है।

➢ कृषि एवम् औद्योगिक निवेश के उद्देश्य ऋण प्रदान करते हैं जबकि शहरी राज्य सहकारी बैंक एक राज्य से बाहर कार्य नहीं कर सकते जबकि शहरी - सहकारी बैंक कई राज्यों में कार्य कर सकते हैं।

➢ राज्य सहकारी बैंक मुख्यत: सहकारी बैंक लगभग सभी उद्देश्य से ऋण प्रदान करते हैं राज्य सहकारी बैंक दो स्तर पर कार्य करते हैं
जिला स्तर पर एवम् ग्रामीण स्तर पर
जिला स्तर पर यह central Co-operatie Bank कहलाती हैं जबकि ग्रामीण स्तर पर यह Primary Agricultural creadet societies (PACS) कहलाते हैं।

<u>भारत में विदेशी बैंक (Foreign Banks of India)</u>

- भारत में विदेशी बैंकों की 44 इकाइयाँ कार्यरत हैं। वस्तुत: विश्व व्यापार संगठन (WTO) के साथ किए गए समझौतों के अनुरूप देश में विदेशी बैंकिंग इकाइयों को लाइसेंस देना आवश्यक है । इसके अनुसार वर्ष में कम से कम 12 विदेशी बैंकों की शाखाओं को स्थापित किया जाएगा ।
- नये प्रावधानों के अनुरूप विदेशी बैंकों को भारत में अपनी पहली शाखा खोलते समय मात्र 10 मिलियन डॉलर पूँजी की आवश्यकता होगी जबकि दूसरी और तीसरी शाखा के विस्तार के लिए अतिरिक्त पूँजी की आवश्यकता क्रमशः 10 मिलियन तथा 5 मिलियन डॉलर की होगी ।
- भारत में स्टैंडर्ड एवं चार्टर्ड बैंक (ब्रिटेन) की सर्वाधिक 100 शाखाएँ कार्यरत हैं । इसके पश्चात् हाँगकाँग एण्ड शंघाई बैंक कॉरपोरेशन (HSBC) की 50 शाखाएँ भारत में कार्यरत हैं । भारत में सिटी बैंक (City Bank) की भी 43 शाखाएँ कार्यरत हैं ।

<u>विदेशों में भारतीय बैंक (Indian Banks in Abroad)</u>

- मार्च , 2016 के आँकड़ों के अनुसार 52 देशों में सार्वजनिक क्षेत्र 12 तथा निजी क्षेत्र के 3 बैंक कार्यरत थे । संयुक्त रूप से इन बैंकों के 172 शाखा कार्यालय तथा 55 प्रतिनिधि कार्यालय थे ।
- विदेशों में भारतीय स्टेट बैंक की सर्वाधिक 52 शाखाएँ कार्यरत हैं जबकि दूसरे स्थान पर बैंक ऑफ बड़ौदा की 51 शाखाएँ कार्यरत हैं
- इन दोनों बैंकों के अतिरिक्त बैंक ऑफ इंडिया , केनरा बैंक , इंडियन बैंक , यूको बैंक तथा सिंडीकेट बैंक की शाखाएँ विदेशों में कार्यरत हैं
- भारतीय बैंक की ब्रिटेन में सर्वाधिक शाखाएँ 30 कार्यरत हैं इसके बाद हाँगकाँग , सिंगापुर , यूएई और श्रीलंका में क्रमश : 19, 17, 13 तथा 10 शाखाएँ कार्यरत हैं ।
- भारत में इस समय 12 पब्लिक सेक्टर बैंक , 22 प्राइवेट सेक्टर बैंक 44 विदेशी बैंक, 56 ग्रामीण बैंक 1485 शहरी कॉऑपरेटिव बैंक तथा 9600 ग्रामीण कॉपरेटिव बैंक कार्य कर रहे हैं ।
- **NOTE-बजट 2021-22 के अनुसार सरकार IDBI बैंक का Disinvest तथा दो सार्वजनिक बैंक का निजीकरण कर रही है ।**
- विदेशों में भारतीय बैंकों की शाखाएँ 2016-17 में 36.5% बढ़ी , जबकि भारत में विदेशी बैंकों की शाखाओं में 20.6%की वृद्धि हुई है ।

बैंकिग क्षेत्र में सुधार के उद्देश्य से गठित समितियाँ व योजनाएँ

नरसिंहम समिति

- राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया के उपरान्त भारत में सभी बैंक सार्वजनिक क्षेत्र के हो गए परन्तु सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों की वित्तिय स्थिति निरन्तर कमजोर होती गई ।
- बैंकिंक क्षेत्र का लगभग काम धम सा गया एवम् प्रतिस्पर्धा तथा गुणवत्ता दोनों में कमी गई ।
- अतः बैंकिक क्षेत्र में सुधार के उद्देश्य से RBI के पूर्व गवर्नर एम.नरसिंहम की अध्यक्षता में अगस्त, 1991में एक नौ सदस्य समिति का गठन किया गया था ।
- समिति ने अपनी रिपोर्ट 17 नवम्बर, 1991 को पेश की थी ।

नरसिंहम समिति के मुख्य सुझाव-

- बैंकों के राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया बन्द की जाए ।
- सभी बैंकों की सभी शाखाओं का पूर्ण कम्प्यूटरीकरण किया जाए ।
- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक एवम् नीजी क्षेत्र के बैंक को समान दर्जा दिया जाये एवम् दोनों में किसी भी प्रकार का भेद-भाव न किया जाए ।
- कमजोर बैंकों का विलय स्वस्थ्य बैंकों में किया जाए।
- कुछ भारतीय बैंकों को जैसे SBI को विश्व स्तरीय रूप में उभारा जाए (इसी सुझाव के अन्तर्गत SBI के सहायक बैंकों का विलय SBI में किया जा रहा है
- जमा राशि पर बैंकों द्वारा दिए गए RBI स्वतंत्र कर दें ।
- लाभ चल रहीं सार्वजनिक बैंकों को शेयर बाजार में सूचीबद्ध होने की अनुमति दी जाए ।
- CRR एवम् SLR को कम किया जाए ताकी बैंकों के पास कारोबार ज्यादा शाही बच सकें (इसी सुझाब के अन्तर्गत RBI संशोधन अधिनियम 2006 के अन्तर्गत CRR पर ने अधिकतम एवम् न्यूनतम सेवाएँ खत्म कर दी गई जबकि SLR पर न्यूनतम सीमा खत्म कर दी गई ।
- Asset Reconstruction companies (ARC) की स्थापना की जाये जो की बैंकों के गैर निष्पादनकारी परिसंपत्तियाँ (NPA-NonPerforming Asset) की वसूली करेंगे ।
- प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में दिए जाने वाले ऋण में सुधार किया जाए (Prinity Sectos, handliny) एवम् यह बैंकों पर छोड़ दिया जाए कि वह कितना ऋण किल क्षेत्र में प्रदान करना चाहते हैं ।

नरसिंहम समिति- II

- इस समिति का गठन 26 दिसम्बर, 1997 को किया गया तथा अपनी रिपोर्ट 22 अप्रैल, 1998 को केन्द्रीय वित्त मंत्री के सम्मुख पेश की ।
- समिति का उद्देश्य वित्तीय ढाँचे, संगठन, कार्यप्रणाली व कार्यविधियों से संबंधित सभी पहलुओं की जाँच की है ।
- इस समिति ने पूँजी खाते में रुपये की पूर्ण परिवर्तनीयता की सिफारिश की पर इसके पहले देश की वित्तीय व्यवस्था को मजबूत व स्थायी बनाने पर बल दिया, साथ ही बैंक की परिसम्पत्तियों की गुणवत्ता में सुधार गैर - निष्पक्षीय परिसम्पत्तियों में कमी, पूँजी (NPA) पर्याप्तता अनुपात में वृद्धि की अनुशंसा की है।
- बैंकों की खराब परिसम्पत्तियों के अधिग्रहण के लिए एसेट रिकन्सट्रक्शन फण्ड , भारतीय रिजर्व बैंक की नियामक व देख रेख सम्बन्धी क्रियाओं को पृथक करने हेतु बोर्ड फॉर फाइनेंशियल सुपरविजन (Board for Financial Supervision, BFS) को स्वायत्तता प्रदान करने की भी सिफारिश की ।
- बैंकों को राजनीति से मुक्त करने , निर्देशक बोर्ड में पेशेवर व्यक्तियों के शामिल करने तथा बैंक के किसी भी कर्मचारी के विरुद्ध कार्यवाही से पूर्व समुचित जाँच - पड़ताल करने की संस्तुति भी की हो ।

दामोदरन समिति

- इस समिति की स्थापना वर्ष 2011 में की गई जिसने अपनी रिपोर्ट अगस्त, 2011 में सरकार को सौंप दी ।
- सेबी (SEBI) के पूर्व अध्यक्ष एम. दामोदरन की अध्यक्षता में गठित समिति ने बैंकिंग सेवाओं में सुधार हेतु कई महत्त्वपूर्ण सिफारिशें की हैं ।
- इसके साथ जारी रिपोर्ट पर RBI द्वारा आम जनता की टिप्पणियाँ भी आमंत्रित की गई थी
- बैंकिंग सेवाओं के संदर्भ में समिति द्वारा ' न्यूनतम बैलेन्स ' की अवधारणा को समाप्त करने का सुझाव दिया गया है और आवश्यक सेवाओं को निःशुल्क बनाने की भी सिफारिशें की गई हैं ।
- होम लोन , निःशुल्क कॉल सेण्टर की स्थापना आदि के संदर्भ में भी समिति ने अपने विचार व्यक्त किए हैं ।

- चैम्पियंस ऑफ चेंज (Champions of Change) : 12 क्षेत्रकों में नीतिगत सुझावों के लिये स्टार्ट-अप्स औरउद्योग के साथ माननीय प्रधानमंत्री के हितधारक विचार-विमर्श में सहयोग देना।

7-उन्नत प्रौद्योगिकियों का अंगीकरण (Adoption of Frontier Technologies)

- नीति आयोग ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी, एआई और शासन में इसके प्रयोग संबंधी पोजीशन पेपर पर कार्य कर रहा है।
- भूमि अभिलेखों, इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य अभिलेखों, आदि के संबंध में राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्रों के साथ भागीदारीपर कार्य कर रहा है।
- नीति आयोग के लिये एमआईएस (management information system) डेटाबेस का कार्यान्वयन करना।
- मध्यस्थता और प्रवर्तन संबंधी भारत सम्मेलन (India Conference) का आयोजन करना।
- सरकार की सर्वश्रेष्ठ कार्य-पद्धतियों के संबंध में नीति आयोग के लिये डिजिटल हब (Digital Hub) तैयार करना।

8-नीति आयोग की अभिनव भारत @75 कार्यनीति

- नीति आयोग ने 'अभिनव भारत @75 के लिये कार्यनीति' (Strategy for New India @ 75) जारी की है
- जिसमें 2022-23 हेतु उद्देश्यों को परिभाषित किया गया है।
- यह 41 महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों का विस्तृत विवरण है जिसमें पहले से हो चुकी प्रगति को मान्यता दी गई है, प्रगति के मार्ग मेंबाध्यकारी रुकावटों की पहचान की गई है और स्पष्ट रूप से वर्णित उद्देश्यों को प्राप्त करने के विषय में सुझाव दिये गएहैं।

नीति आयोग द्वारा की गयी पहल:

इसकी महत्वपूर्ण पहलों में "15 साल का रोड मैप", "7 साल का विज़न, रणनीति और कार्य योजना", AMRUT, डिजिटलइंडिया और अटल इनोवेशन मिशन शामिल हैं।

आर्थिक समीक्षा 2021-22

- आर्थिक समीक्षा 2021-22 का सारांश 2022-23 में भारत की आर्थिक विकास दर 8.0-8.5 प्रतिशत होने का अनुमान
- विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमानों के अनुसार भारत 2021-24 के दौरान विश्व की प्रमुख तीव्रगामी अर्थव्यवस्था बना रहेगा
- भारतीय अर्थव्यवस्था 2021-22 में 9.2 प्रतिशत वास्तविक वृद्धि दर्ज करेगी
- कृषि क्षेत्र में पिछले वर्ष 3.6 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में 2021-22 में 3.9 प्रतिशत की वृद्धि दर संभावित
- औद्योगिक क्षेत्र में 2020-21 के दौरान 7 प्रतिशत की विकास दर तेजी से बढ़कर 2021-22 में 11.8 प्रतिशत होने का अनुमान
- सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर पिछले वर्ष की 8.4 प्रतिशत से घटकर 2021-22 में 8.2 प्रतिशत हो जाएगी
- 31 दिसंबर, 2021 को विदेशी मुद्रा भंडार 634 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा, जो 13 महीनों से अधिक के आयात के समतुल्य और देश के विदेशी ऋण से अधिक है
- 2021-22 में निवेश में 15 प्रतिशत की जोरदार वृद्धि होने का अनुमान
- दिसंबर 2021 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक के साथ 5.6 प्रतिशत महंगाई दर लक्ष्य के अनुसार सहन-योग्य दायरे में है
- अप्रैल-नवम्बर 2021 के लिए राजकोषीय घाटे को बजट अनुमानों के 46.2 प्रतिशत तक सीमित किया गया
- महामारी के बावजूद पूंजी बाजार में तेज वृद्धि; अप्रैल-नवम्बर 2021 के दौरान 75 आईपीओ जारी करके 89 हजार करोड़ रुपये से अधिक धनराशि जुटाई गई, जो पिछले दशक के किसी भी वर्ष की तुलना में काफी अधिक है
- सूक्ष्म अर्थव्यवस्था स्थायित्व संकेतकों के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था 2022-23 की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKj14nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/2iclos

Online order - https://bit.ly/asi-woman

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

whatsa pp-https://wa.link/2iclos 2 web.- https://bit.ly/asi-woman